CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/3/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(a). वर्षों तक वन में घूम-घूम,
बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,
पांडव आये कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें, आगे क्या होता है।
मैत्री की राह बताने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,
भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेशा लाये।
'दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।
दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे हरि को बाँधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।' [5 अंक]

1(a)(i). कठिनाइयों और संघर्षों को सहन कर पांडवों में किस प्रकार का बदलाव आया ? [1 अंक]

(A) मनोबल टूट गया
(B) व्यक्तित्व निखर गया
(C) हिम्मत टूट गई
(D) मजबूत हो गए

सही उत्तर: (B) व्यक्तित्व निखर गया

हल:

अवधारणा:

- अपठित पद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके प्रत्यक्ष कथन और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट भाव या अर्थ को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करे।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानें पद्यांश में स्पष्ट है कि पांडव बाधाओं, धूप, वर्षा और कठिन परिस्थितियों को सहकर लौटे। कवि उनके लिए कहता है, 'पांडव आये कुछ और निखर।' यह पंक्ति कठिनाइयों के बाद उनके व्यक्तित्व में आए सकारात्मक परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें मनोबल या हिम्मत टूटने की बात विकल्प (A) और (C) में है, जबकि कविता में निखरने की बात है। विकल्प (D) में मजबूत होने का भाव निकट अवश्य है, पर विकल्प (B) कविता के 'निखर' शब्द और समग्र व्यक्तित्व के विकास को

अधिक सटीक रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (B) है — व्यक्तित्व निखर गया।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में आए बदलाव को कविता के 'निखर' जैसे निर्णायक शब्द से मिलाइए।

1(a)(ii). भगवान हस्तिनापुर क्यों आये थे ? [1 अंक]

(A) युद्ध टालने के लिए

(B) सबकी कुशल-क्षेम जानने

(C) पांडवों का संदेश लेकर

(D) दुर्योधन से बात करने

सही उत्तर: (A) युद्ध टालने के लिए

हल:

अवधारणा:

- अपठित पद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके प्रत्यक्ष कथन और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट भाव या अर्थ को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करे।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानें भगवान के आगमन का उद्देश्य कविता में 'मैत्री की राह बताने को' तथा 'भीषण विध्वंस बचाने को' कहकर बताया गया है। वे दुर्योधन को समझाकर पांडवों और कौरवों का संघर्ष रोकना चाहते हैं। अत: उनके आगमन का व्यापक उद्देश्य युद्ध को टालना और शांति स्थापित करना है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (B) में दी गई कुशल-क्षेम जानने की बात पद्यांश में नहीं है। विकल्प (C) का संदेश लाना तथा (D) का दुर्योधन से बात करना घटनाक्रम के सत्य विवरण हैं, लेकिन ये शांति स्थापित करने के साधन हैं। 'क्यों' के उत्तर में उद्देश्य बताने वाला विकल्प (A) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (A) है — युद्ध टालने के लिए।

त्वरित सुझाव: 'क्यों' पूछे जाने पर घटना के साधन के बजाय उसका मुख्य उद्देश्य चुनिए।

1(a)(iii). 'तो दे दो केवल पाँच ग्राम' — पंक्ति में निहित जीवन मूल्य है : [1 अंक]

(A) संतोष

(B) त्याग

(C) प्रेम

(D) करुणा

सही उत्तर: (A) संतोष

हल:

अवधारणा:

- अपठित पद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके प्रत्यक्ष कथन और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट भाव या अर्थ को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करे।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानें पहले न्याय के अनुसार आधा राज्य माँगा गया है, पर शांति के लिए यह भी कहा गया कि यदि इसमें

बाधा हो तो केवल पाँच गाँव दे दिए जाएँ। इसके बाद 'हम वहीं खुशी से खायेंगे' कहकर कम साधनों में प्रसन्न जीवन बिताने की स्वीकृति दी गई है। यही संतोष का भाव है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (B) का त्याग इस समझौते से जुड़ा सहायक भाव हो सकता है, पर पाँच गाँव पाकर खुशी से रहने की बात संतोष को सीधे प्रकट करती है। विकल्प (C) का प्रेम और (D) की करुणा इस पंक्ति का केंद्रीय मूल्य नहीं हैं। प्रश्न की निर्दिष्ट पंक्ति के लिए विकल्प (A) अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (A) है — संतोष।

त्वरित सुझाव: जीवन-मूल्य पहचानते समय पंक्ति के साथ उसके तुरंत बाद आए भाव को भी पढ़िए।

1(a)(iv). 'परिजन पर असि न उठायेंगे' — पंक्ति में प्रयुक्त 'असि' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) तीर-धनुष

(B) गदा

(C) तलवार

(D) भाला

सही उत्तर: (C) तलवार

हल:

अवधारणा:

- अपठित पद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके प्रत्यक्ष कथन और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट भाव या अर्थ को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करे।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानें 'असि' का अर्थ तलवार होता है। पंक्ति में पांडवों का संदेश है कि वे अपने परिजनों पर तलवार नहीं उठाएँगे। यह कथन परिवार के सदस्यों के विरुद्ध युद्ध से बचने की उनकी इच्छा स्पष्ट करता है और पाँच गाँव स्वीकार करने वाले शांति-प्रस्ताव से भी मेल खाता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (A) तीर-धनुष, (B) गदा तथा (D) भाला अलग-अलग शस्त्र हैं। इनका अर्थ 'असि' नहीं होता। केवल युद्ध-संबंधी शब्द देखकर किसी भी हथियार को चुनना ठीक नहीं है; यहाँ विशेष शब्द का निश्चित अर्थ तलवार ही लेना चाहिए। इसलिए विकल्प (C) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (C) है — तलवार।

त्वरित सुझाव: 'असि' को तलवार के पर्याय के रूप में याद रखें और पूरे वाक्य में उसका अर्थ बैठाएँ।

1(a)(v). विवेक के मर जाने से क्या होता है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य का नाश होता है

(B) मनुष्य भ्रमित हो जाता है

(C) ग़लत कार्य करने की प्रेरणा

(D) असामाजिक कार्य की ओर प्रेरित

सही उत्तर: (A) मनुष्य का नाश होता है

हल:

अवधारणा:

- अपठित पद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके प्रत्यक्ष कथन और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट भाव या अर्थ को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करे।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानें कवि कहता है, 'जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।' दुर्योधन पाँच गाँव देने से इनकार करता है और भगवान को ही बाँधने की असंभव कोशिश करता है। ये प्रसंग दिखाते हैं कि उचित-अनुचित की पहचान खोने पर मनुष्य विनाश की दिशा में बढ़ता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (B) का भ्रमित होना तथा (C) और (D) में गलत या असामाजिक कर्म की ओर प्रेरणा विवेकहीनता के बीच के लक्षण हो सकते हैं। किंतु अंतिम पंक्तियाँ जिस समग्र परिणाम पर बल देती हैं, वह मनुष्य का नाश है। इसलिए दिए गए विकल्पों में (A) कविता के कथन का सीधा और पूर्ण उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (A) है — मनुष्य का नाश होता है।

त्वरित सुझाव: परिणाम पूछे जाने पर कविता की अंतिम निर्णायक पंक्ति में व्यक्त निष्कर्ष को चुनिए।

अथवा

1(b). 'मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब उसे तोल सकता है धन ?
धरती की तो है क्या बिसात ?
आ जाय अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।
सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ,
उस दिन के लिए मचलता हूँ,
यदि चले वज्र दुर्योधन पर,
ले लूँ बढ़कर अपने ऊपर।
कटवा दूँ उसके लिए गला,
चाहिए मुझे क्या और भला ?
सम्राट बनेंगे धर्मराज,
या पाएगा कुरुराज ताज,
लड़ना भर मेरा काम रहा,
दुर्योधन का संग्राम रहा
मुझको न कहीं कुछ पाना है,
केवल ऋण मात्र चुकाना है।
कुरुराज्य चाहता मैं कब हूँ ?
साम्राज्य चाहता मैं कब हूँ ?

क्या नहीं आपने भी जाना ?
मुझको न आज तक पहचाना ?
जीवन का मूल्य समझता हूँ,
धन को मैं धूल समझता हूँ।
धनराशि जोगना लक्ष्य नहीं
साम्राज्य भोगना लक्ष्य नहीं' [5 अंक]

1(b)(i). काव्यांश में 'अनमोल रतन' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) जिसका मूल्य बहुत अधिक हो
(B) जिसका मूल्य आँका न जा सके
(C) जिसका मूल्य नापा न जा सके
(D) जिसका मूल्य जाँचा न जा सके

सही उत्तर: (B) जिसका मूल्य आँका न जा सके

हल:

अवधारणा:

- अनमोल का अर्थ मूल्य की सीमा से परे होना है। कविता में मित्रता को धन से तौलना असंभव बताया गया है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें कवि पूछता है, 'कब उसे तोल सकता है धन?' यह प्रश्न मित्रता के ऐसे मूल्य को व्यक्त करता है जिसका धन के आधार पर आकलन नहीं हो सकता। इसलिए केवल अधिक कीमत होना इसका पूरा अर्थ नहीं है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) में मूल्य बहुत अधिक होते हुए भी निर्धारित किया जा सकता है। (C) में आकार या परिमाण नापने का भाव है और (D) में परखने का। यहाँ भाव मूल्य आँकने से संबंधित है, न मापने या जाँचने से।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — जिसका मूल्य आँका न जा सके।

त्वरित सुझाव: 'अनमोल' का अर्थ तय करते समय 'कब उसे तोल सकता है धन' से मूल्य आँकने की असमर्थता जोड़ें।

1(b)(ii). किस पर स्वर्ग न्योछावर करने की बात की गई है ? [1 अंक]

(A) मित्रता पर
(B) धरती पर
(C) धन पर
(D) राज्य पर

सही उत्तर: (A) मित्रता पर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए स्वर्ग के त्याग वाली पंक्तियों का संबंध कविता के आरंभिक कथन से जोड़ना आवश्यक है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें 'मित्रता बड़ा अनमोल रतन' कहने के बाद वक्ता बैकुंठ मिलने पर उसे भी न्योछावर करने की बात करता है। 'कुरुपति के चरणों पर धर दूँ' से मित्र के प्रति उसका समर्पण स्पष्ट है। स्वर्ग का त्याग मित्रता के लिए है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (B) धरती को छोटी वस्तु बताकर तुलना की गई है; स्वर्ग उस पर न्योछावर नहीं किया जा रहा।

(C) धन मित्रता से तुच्छ है। (D) राज्य भी वक्ता का लक्ष्य नहीं है। इन तीनों की अपेक्षा मित्रता को सर्वोच्च रखा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है — मित्रता पर।

त्वरित सुझाव: स्वर्ग न्योछावर करने वाली पंक्ति को आरंभ की 'मित्रता बड़ा अनमोल रतन' से जोड़कर त्याग का आधार पहचानें।

1(b)(iii). काव्यांश में वक्ता द्वारा युद्ध में सम्मिलित होने का कारण है : [1 अंक]

(A) साम्राज्य प्राप्ति

(B) कर्तव्यपरायणता

(C) ऋण चुकाना

(D) वीरता-प्रदर्शन

सही उत्तर: (C) ऋण चुकाना

हल:

अवधारणा:

- वक्ता के युद्ध में उतरने का कारण उसके अपने स्पष्ट उद्देश्य-कथन से पहचाना जाता है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें वक्ता कहता है, 'मुझको न कहीं कुछ पाना है, केवल ऋण मात्र चुकाना है।' दुर्योधन का साथ देकर वह मित्र के उपकार का ऋण चुकाना चाहता है। इसीलिए युद्ध को अपना लाभ प्राप्त करने का साधन नहीं मानता।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) साम्राज्य प्राप्ति का वह स्वयं निषेध करता है। (B) कर्तव्यपरायणता उसके आचरण का सामान्य गुण हो सकती है, किंतु यहाँ विशिष्ट कारण ऋण चुकाना है। (D) वीरता दिखाने की इच्छा का उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — ऋण चुकाना।

त्वरित सुझाव: युद्ध का कारण पूछने पर 'केवल ऋण मात्र चुकाना है' जैसी सीधे उद्देश्य बताने वाली पंक्ति चुनें।

1(b)(iv). 'सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ' — पंक्ति में 'स्कंध' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) हथेली

(B) तलवार

(C) कंधा

(D) गला

सही उत्तर: (C) कंधा

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ पंक्ति में उसके प्रयोग और आसपास के कथन से निश्चित करना चाहिए।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें 'सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ' में स्कंध शरीर के उस अंग का नाम है जिस पर सिर टिका होता है। इसका सरल हिंदी अर्थ कंधा है। आगे मित्र के लिए अपना गला कटवा देने का संकल्प भी शरीर और बलिदान के इसी प्रसंग से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) हथेली हाथ का भाग है और इस पंक्ति में सिर का आधार नहीं है। (B) तलवार एक शस्त्र है, शरीर का अंग नहीं। (D) गला निकट संबंध वाला अंग होते हुए भी स्कंध का शब्दार्थ नहीं है। अतः प्रसंग और शब्दार्थ दोनों कंधे की पुष्टि करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — कंधा।

त्वरित सुझाव: 'स्कंध' का अर्थ याद रखने के लिए सिर और कंधे के शारीरिक संबंध को इस पंक्ति से जोड़ें।

1(b)(v). धन को धूल समझने के क्या कारण हो सकते हैं ? [1 अंक]

(A) जीवन का अस्थायित्व

(B) अनुपयोगी होना

(C) महत्त्वहीन होना

(D) दूसरा लक्ष्य होना

सही उत्तर: (D) दूसरा लक्ष्य होना

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन का कारण जानने के लिए वक्ता के घोषित जीवन-लक्ष्य को देखना आवश्यक है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें वक्ता स्पष्ट करता है, 'धनराशि जोगना लक्ष्य नहीं, साम्राज्य भोगना लक्ष्य नहीं।' उसका उद्देश्य मित्रता निभाना और उपकार का ऋण चुकाना है। इस दूसरे लक्ष्य के सामने धन उसके लिए धूल के समान तुच्छ हो जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) जीवन का अस्थायित्व यहाँ कारण नहीं बताया गया। (B) धन को सर्वथा अनुपयोगी भी नहीं कहा गया। (C) महत्त्वहीन होना धन के प्रति उसके दृष्टिकोण का परिणाम है; प्रश्न उसका कारण पूछता है। (D) दूसरा लक्ष्य होना उस दृष्टिकोण का स्पष्ट आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — दूसरा लक्ष्य होना।

त्वरित सुझाव: धन को धूल कहने का कारण खोजते समय 'लक्ष्य नहीं' और 'ऋण मात्र चुकाना है' को साथ पढ़ें।

2. समाज में, परिवार में विविध कुल परंपराओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। हमारे वयोवृद्ध ही इन संस्कृतियों एवं परंपराओं के वाहक होते हैं और इनसे भलीभाँति परिचित होते हैं। वयोवृद्ध परिवार के तरुण सदस्यों को धर्मोन्मुख करते हैं, धार्मिक विधि-विधानों का महत्त्व समझाते हैं। वे भौतिकता और आध्यात्मिकता में संतुलन कायम करना सिखाते हैं। वे ही परिवार में शांति के उपाय, लोक-व्यवहार, रीति-नीति आदि के बारे में सद्गुण विकसित करने में सहायक होते हैं और संस्कारों की नींव रखते हैं। अतः किसी भी कारणवश परिवार के वृद्धजनों का अनादर एवं अपमान नहीं होना चाहिए। तरुणों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ और उनके मान-सम्मान में कोई कमी न आने दें तथा उनकी सुरक्षा कोमलता से करें। भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं जिसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा एवं उनका तिरस्कार है। बुजुर्गों को दरकिनार करने से आज परिवारों में कलह-क्लेश, दुख-संताप बढ़ रहा है। भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं। मानसिक अशांति बढ़ रही है, रोग-शोक बढ़ रहे हैं। परिवार के तरुण सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार के वृद्धजनों को अपने से अलग न करें एवं उनका यथोचित मान-सम्मान करें। परिवार, समाज की कसौटी पर खरी उतरने वाली धारणाओं, मान्यताओं एवं परम्पराओं को तोड़ने-मोड़ने का या उनकी अनदेखी करने का प्रयास कदापि न करें। संस्कार वहीं अच्छे होंगे जहाँ बुजुर्गों का, माँ-बाप का मान-सम्मान करते हुए उनके द्वारा निर्देशित संस्कृति एवं परंपराओं का ध्यान रखा जाएगा। बुजुर्ग जीवन के मूल्यों को जानने वाले होते हैं। उनका भी कर्तव्य है कि वे परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप इसलिए न करें कि वे बुजुर्ग हैं। उनको भी हृदय की विशालता बनाए रखने में संकोच नहीं करना चाहिए। [10 अंक]

2(i). वृद्धजनों को संस्कारों और रीतिरिवाजों का वाहक क्यों माना जाता है ? [1 अंक]

(A) क्योंकि वे जीवन-मूल्यों को जानने वाले होते हैं

(B) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं

(C) क्योंकि वे निष्ठा और लगन से इनका पालन करते हैं

(D) क्योंकि वे जीवन में इनके महत्त्व से परिचित हैं

सही उत्तर: (B) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं

हल:

अवधारणा:

- वाहक वह होता है जो किसी परंपरा को सँभालते हुए आगे पहुँचाता है। उत्तर में इसी भूमिका को पहचानना है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें गद्यांश में बुजुर्गों द्वारा तरुणों को धर्मोन्मुख करने, विधि-विधान समझाने तथा संस्कारों की नींव रखने का उल्लेख है। वे संस्कृति और रीतिरिवाज अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हैं; इसी अर्थ में वे इनके वाहक हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) जीवन-मूल्यों का ज्ञान तथा (D) महत्त्व से परिचय उनकी योग्यताएँ हैं, लेकिन आगे पहुँचाने की भूमिका नहीं बताते। (C) स्वयं निष्ठा से पालन करना भी अकेले वाहक होने का अर्थ नहीं समझाता। (B) पीढ़ियों के बीच संस्कार पहुँचाने का कार्य सीधे व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करके उससे संबंधित पंक्ति खोजें और तभी विकल्प चुनें।

2(ii). संस्कार संबंधी पारिवारिक परंपराओं के समाप्त होने का कारण है : [1 अंक]

(A) संयुक्त परिवारों का विघटन

(B) भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन

(C) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(D) व्यस्त जीवन-शैली

सही उत्तर: (B) भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी सामाजिक बदलाव का कारण ढूँढ़ते समय लेखक के प्रत्यक्ष कारण-सूचक कथन को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें लेखक कहता है कि भौतिक जीवन-शैली के चलते संस्कृति के मूल्य बदल रहे हैं और बुजुर्गों की उपेक्षा हो रही है। इस बदलाव के कारण संस्कार संबंधी परंपराएँ कमजोर पड़ती हैं। इसलिए कारण भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) संयुक्त परिवारों के विघटन को इस बदलाव का मूल कारण नहीं बताया गया। (C) पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और (D) व्यस्त जीवन-शैली का भी इस कारण के रूप में उल्लेख नहीं है। ये सामान्य अनुमान हो सकते हैं, पर उत्तर गद्यांश के आधार पर चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करके उससे संबंधित पंक्ति खोजें और तभी विकल्प चुनें।

2(iii). वृद्ध व्यक्तियों को परिवार की धुरी क्यों माना जाता है ? [1 अंक]

(A) भौतिक जीवन-शैली के दुष्परिणामों से अवगत कराने के कारण

(B) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण

(C) जीवन के लंबे अनुभव और ज्ञान के कारण

(D) परंपराओं और संस्कारों का सम्मान करने के कारण

सही उत्तर: (B) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण

हल:

अवधारणा:

- धुरी से आशय उस केंद्रीय आधार से है जिसके सहारे परिवार की व्यवस्था और मूल्य टिके रहते हैं।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें गद्यांश बुजुर्गों को शांति, लोक-व्यवहार और रीति-नीति के सद्गुण विकसित करने में सहायक बताता है। वे संस्कारों की नींव रखते हैं। यही रचनात्मक भूमिका उन्हें परिवार का केंद्रीय आधार अर्थात धुरी बनाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) दुष्परिणामों से अवगत कराना यहाँ मुख्य भूमिका नहीं कही गई। (C) अनुभव और ज्ञान इस भूमिका के साधन हैं, उसका प्रत्यक्ष वर्णन नहीं। (D) परंपराओं का स्वयं सम्मान करना सीमित बात है; (B) पूरे परिवार में सद्गुण और संस्कार विकसित करने को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करके उससे संबंधित पंक्ति खोजें और तभी विकल्प चुनें।

2(iv). वृद्धजनों का अनादर करने के परिणामों के विषय में कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) सामाजिक व पारिवारिक विघटन

(B) समाज और परिवार में कुव्यवस्था

(C) परिवार में कलह-क्लेश, दुःख-संताप

(D) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन

सही उत्तर: (D) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन

हल:

अवधारणा:

- असत्य कथन चुनते समय बुजुर्गों के अनादर के परिणाम और भौतिक जीवन-शैली से उत्पन्न व्यापक मूल्य-परिवर्तन में अंतर करें।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के स्पष्ट शब्दों तथा उनके संदर्भ को प्राथमिकता दें।

चरण 1: पाठ के आधार पर अर्थ समझें गद्यांश बुजुर्गों को दरकिनार करने से परिवारों में कलह-क्लेश और दुख-संताप बढ़ने की बात कहता है। सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था का बिगड़ना तथा संबंधों का बिखरना इसी उपेक्षा के परिणाम हैं। इसलिए (A), (B) और (C) इसी परिणाम-समूह के अनुकूल हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें भौतिकता और आध्यात्मिकता में संतुलन कायम करना बुजुर्गों की शिक्षाप्रद भूमिका है। किंतु गद्यांश उनके अनादर के परिणाम के रूप में इस संतुलन के बिगड़ने को स्थापित नहीं करता। भौतिक जीवन-शैली मूल्य-परिवर्तन और उपेक्षा की पृष्ठभूमि है। अतः (D) को अनादर का परिणाम कहना यहाँ उचित नहीं है; प्रश्न में यही असत्य कथन चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करके उससे संबंधित पंक्ति खोजें और तभी विकल्प चुनें।

2(ix). 'भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं।' — पंक्ति का आशय है : [1 अंक]

(A) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है

(B) भौतिक जीवन-शैली ने हमें धर्म-प्रधान बना दिया है

(C) भौतिक जीवन-शैली ने हमें भाव-प्रधान बना दिया है

(D) भौतिक जीवन-शैली ने हमें कर्म-प्रधान बना दिया है

सही उत्तर: (A) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: पंक्ति का आशय गद्यांश में भौतिक जीवन-शैली के कारण आस्था, संस्कार और बुजुर्गों के सम्मान के कमजोर होने की बात है। यहाँ भौतिकता का संबंध धन, वस्तुओं और सुविधाओं को अधिक महत्त्व देने से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच अर्थ-प्रधान होने का अर्थ धन और भौतिक साधनों को जीवन का केंद्र बना लेना है। धर्म-प्रधान होना आध्यात्मिक मूल्यों को, भाव-प्रधान होना संवेदना को और कर्म-प्रधान होना कर्तव्य को प्रमुख मानना है। विकल्प (B), (C) और (D) उस मूल्य-परिवर्तन को व्यक्त नहीं करते जिसकी आलोचना गद्यांश करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: भौतिक जीवन-शैली को धन और साधनों की प्रधानता से जोड़ें; यहाँ बदलती आस्थाओं का संकेत अर्थ-प्रधानता की ओर है।

2(v). बुजुर्गों के प्रति बढ़ती उपेक्षा और तिरस्कार का कारण है : [1 अंक]

(A) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(B) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव

(C) बुजुर्गों का अनावश्यक हस्तक्षेप

(D) बुजुर्गों में संयम की कमी

सही उत्तर: (B) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: कारण की पहचान गद्यांश स्पष्ट कहता है कि भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदल रहे हैं और इसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा एवं तिरस्कार है। अतः कारण और परिणाम को इसी क्रम में समझना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) का पाश्चात्य संस्कृति वाला कारण इस स्थान पर नहीं दिया गया है। विकल्प (C) में अनावश्यक हस्तक्षेप को लेकर वृद्धों को सलाह अवश्य मिलती है, पर उसे बढ़ती उपेक्षा का कारण नहीं बताया गया। विकल्प (D) में उल्लिखित संयम की कमी का कथन भी गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कारण खोजते समय गद्यांश के भौतिक जीवन-शैली के चलते और जिसका परिणाम शब्दों को जोड़कर पढ़ें।

2(vi). भौतिक सुख-सुविधा के साधनों की वृद्धि ने जीवन को सुगम बनाने के साथ-साथ क्या दुखद स्थितियाँ दी हैं ? [1 अंक]

(A) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ

(B) व्यस्त जीवन-शैली

(C) धन-दौलत का अंबार

(D) जीवन का एकाकीपन

सही उत्तर: (A) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: दुखद परिणाम की पहचान गद्यांश में भौतिक जीवन-शैली के प्रसंग में कहा गया है कि मानसिक अशांति बढ़ रही है और रोग-शोक बढ़ रहे हैं। मानसिक अशांति मन की व्याधियों की ओर तथा रोग शरीर की व्याधियों की ओर संकेत करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) इन दोनों पक्षों को एक साथ समेटता है। व्यस्त जीवन-शैली और एकाकीपन सामान्य जीवन में संभव हो सकते हैं, लेकिन विकल्प (B) और (D) यहाँ दिए स्पष्ट संकेतों का पूरा उत्तर नहीं हैं। विकल्प (C) का धन-दौलत का अंबार उन शारीरिक और मानसिक कष्टों का नाम नहीं है जिन्हें प्रश्न पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: मानसिक अशांति और रोग-शोक को साथ पढ़ें; इन दोनों संकेतों को समेटने वाला विकल्प ही पूरा उत्तर है।

2(vii). युवाओं को वृद्धों के साथ क्या नहीं करना चाहिए ? [1 अंक]

(A) वृद्धों का अनादर और अपमान

(B) वृद्धों की कोमलता से सुरक्षा

(C) वृद्धों को परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य मानना

(D) वृद्धों द्वारा निर्देशित परंपराओं का पालन करना

सही उत्तर: (A) वृद्धों का अनादर और अपमान

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: निषेध की पहचान प्रश्न में पूछा गया है कि युवाओं को वृद्धों के साथ क्या नहीं करना चाहिए। गद्यांश में साफ निर्देश है कि किसी भी कारणवश परिवार के वृद्धजनों का अनादर एवं अपमान नहीं होना चाहिए। यही निषिद्ध व्यवहार है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (B) की कोमलता से सुरक्षा, विकल्प (C) में वृद्धों को परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य मानना और विकल्प (D) में उनकी निर्देशित परंपराओं का पालन सम्मानपूर्ण आचरण हैं। गद्यांश युवाओं को ऐसा सकारात्मक व्यवहार अपनाने की प्रेरणा देता है; इसलिए ये तीनों प्रश्न के निषेध का उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष वृद्धों का अनादर और अपमान। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: क्या नहीं करना चाहिए में नहीं पर ध्यान दें; सुरक्षा और सम्मान सकारात्मक हैं, अनादर निषिद्ध है।

2(viii). पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए गद्यांश में वृद्धों से क्या अपेक्षा की गई है ? [1 अंक]

(A) एकांत में रहकर ईश्वर में ध्यान लगाना

(B) परंपराओं और मान्यताओं को युवाओं पर न थोपना

(C) युवाओं की समस्याओं को सुनना और सुलझाना

(D) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना

सही उत्तर: (D) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: वृद्धों से अपेक्षा गद्यांश के अंतिम भाग में वृद्धों का कर्तव्य भी बताया गया है। उन्हें केवल अपनी आयु या वरिष्ठता के आधार पर परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए तथा हृदय की विशालता बनाए रखनी चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (D) इस स्पष्ट निर्देश को व्यक्त करता है। विकल्प (A) में एकांत और ईश्वर-ध्यान का निर्देश नहीं है। विकल्प (B) में परंपराएँ न थोपने तथा विकल्प (C) में समस्याएँ सुनने-सुलझाने की बातें अलग सुझाव हो सकते हैं, पर प्रश्न के लिए गद्यांश में व्यक्त विशिष्ट अपेक्षा अनावश्यक हस्तक्षेप से बचना है।

चरण 3: निष्कर्ष पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के अंतिम दो वाक्य वृद्धों का कर्तव्य बताते हैं; अनावश्यक हस्तक्षेप न करने की अपेक्षा वहीं मिलेगी।

2(x). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन *(A)* : भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं।

कारण *(R)* : भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव सर्वत्र हावी हो रहा है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

(D) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता को अलग-अलग जाँचना चाहिए।
- दोनों सत्य होने पर देखना चाहिए कि कारण कथन में बताए परिवर्तन को स्पष्ट करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश में कहा गया है कि भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं। वृद्धजनों की उपेक्षा तथा परंपराओं की अनदेखी को इसी परिवर्तन का परिणाम बताया गया है। इसलिए कथन (A) पाठ के अनुसार सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता गद्यांश में भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव बढ़ने और उसके कारण आस्थाओं के मूल्य बदलने की बात है। इसलिए कारण (R) भी गद्यांश के आशय के अनुरूप सही है। यहाँ भौतिक सुविधाओं की प्रधानता जीवन-मूल्यों को प्रभावित करती है।

चरण 3: व्याख्या के संबंध की जाँच पाठ में भौतिक जीवन-शैली के चलते मूल्य बदलने का सीधा संबंध दिया गया है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है। विकल्प (B) कथन को असत्य और (C) दोनों को असत्य बताते हैं, इसलिए गलत हैं। विकल्प (D) व्याख्या के संबंध को नकारता है, जबकि गद्यांश उस संबंध को स्थापित करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर पाठ में उनके बीच कारण और परिणाम का स्पष्ट संबंध खोजें।

3. यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ।
अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा।
बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।
जागा निसिचर देखिअ कैसा।
मानहुँ कालु देह धरि बैसा।।
कुंभकरन बूझा कहु भाई।
काहे तव मुख रहे सुखाई।।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी।
जेहि प्रकार सीता हरि आनी।। [5 अंक]

3(i). दसानन के बार-बार सिर धुनने का क्या कारण था ? [1 अंक]

(A) सहयोग नहीं मिलना
(B) संकट से नहीं निकलना
(C) वैद्य द्वारा लक्ष्मण का उपचार करना
(D) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना

सही उत्तर: (D) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का कारण यह बृत्तांत सुनने पर रावण के अत्यधिक विषाद और बार-बार सिर धुनने का वर्णन है। लक्ष्मण-मूर्च्छा के प्रसंग में यह समाचार लक्ष्मण के पुनः स्वस्थ हो जाने का है। इससे रावण की विरोधी पक्ष के निर्बल होने की आशा टूट जाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (D) घटना का निर्णायक परिणाम बताता है। विकल्प (C) में उपचार करना केवल प्रक्रिया है, जबकि रावण के शोक का कारण उपचार का सफल होना है। विकल्प (A) में सहयोग न मिलना और विकल्प (B) में संकट से न निकलना सामान्य स्थितियाँ हैं; वे इस विशेष समाचार का सटीक नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: यह बृत्तांत को लक्ष्मण के स्वस्थ होने के समाचार से जोड़ें; उपचार और उपचार की सफलता में अंतर रखें।

3(ii). अत्यधिक शोक से बेचैन होकर रावण किसके पास गया ? [1 अंक]

(A) मेघनाद

(B) विभीषण

(C) कुंभकरण

(D) मंदोदरी

सही उत्तर: (C) कुंभकरण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: पंक्ति से पात्र की पहचान पद्यांश की पंक्ति ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा में रावण का कुंभकरण के पास जाना सीधे बताया गया है। अगली पंक्ति में उसे अनेक उपाय करके जगाने का वर्णन है। दोनों पंक्तियाँ मिलकर मिलने वाले व्यक्ति की पहचान निश्चित करती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (C) में कुंभकरण है, इसलिए वही पाठानुसार है। मेघनाद, विभीषण और मंदोदरी के नाम विकल्प (A), (B) और (D) में हैं, लेकिन इस घटना में उनके पास जाने का उल्लेख नहीं है। उत्तर सामान्य पारिवारिक संबंध या युद्धभूमि की कल्पना पर नहीं, दी गई पंक्ति पर आधारित होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कुंभकरण। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: किसके पास प्रश्न का उत्तर कुंभकरन पहिं आवा में सीधे है; पहिं का अर्थ पास समझें।

3(iii). कुंभकरण को असमय जगाने के पीछे रावण की क्या मनोदशा रही होगी ? [1 अंक]

(A) कुंभकरण को स्वयं से श्रेष्ठ मानना

(B) कुंभकरण से दिल की बात करना

(C) कुंभकरण को युद्ध में भेजना

(D) कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा

सही उत्तर: (D) कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: मनोदशा का अनुमान व्याकुल रावण अनेक उपाय करके सोए हुए कुंभकरण को जगाता है। आगे कुंभकरण का रूप ऐसा बताया गया है मानो काल शरीर धारण करके बैठा हो। यह वर्णन उसकी असाधारण शक्ति का संकेत है और संकट में रावण की आशा उसी शक्ति पर टिकी है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (D) रावण की आंतरिक आशा और विश्वास को व्यक्त करता है। विकल्प (C) में युद्ध में भेजना संभावित कार्य या उद्देश्य है, मनोदशा का सबसे सटीक नाम नहीं। विकल्प (B) केवल मन की बात कहने तक सीमित है। विकल्प (A) में स्वयं से श्रेष्ठ मानने का भाव पद्यांश में नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मनोदशा और कार्य में अंतर रखें: युद्ध में भेजना कार्य है, जबकि शक्ति पर भरोसा मन का भाव है।

3(iv). 'जागा निसिचर देखिअ कैसा' पंक्ति में 'निसिचर' से किसे संबोधित किया गया है ? [1 अंक]

(A) रावण को

(B) कुंभकरण को

(C) राक्षस को

(D) रात में चलने वाले को

सही उत्तर: (B) कुंभकरण को

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का चयन दिए गए पाठ के स्पष्ट संकेत और प्रसंग के आधार पर करना चाहिए।
- शब्दार्थ, कारण, परिणाम तथा पात्र के संदर्भ में अंतर पहचानकर ही उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंगानुसार शब्द का संदर्भ पहले रावण कुंभकरण के पास आता है और अनेक उपाय करके उसे जगाता है। उसके तुरंत बाद जागा निसिचर देखिअ कैसा कहा गया है। इसलिए जागने वाला निसिचर वही कुंभकरण है, जिसका उल्लेख ठीक पहले हुआ है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच निसिचर का सामान्य अर्थ राक्षस अथवा रात में विचरण करने वाला हो सकता है, पर प्रश्न इस पंक्ति में संबोधित व्यक्ति पूछता है। इसलिए विकल्प (C) और (D) केवल सामान्य शब्दार्थ हैं। विकल्प (A) का रावण जगाने वाला पात्र है, जागने वाला नहीं। प्रसंग में व्यक्ति का निश्चित नाम विकल्प (B) देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कुंभकरण को। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: निसिचर का सामान्य अर्थ बताने के बजाय जागने वाले पात्र का नाम देखें; पिछली पंक्ति कुंभकरण की पहचान देती है।

3(v). कुंभकरण ने रावण से क्या पूछा ? [1 अंक]

(A) सीता हरण का कारण

(B) अपने पास आने का कारण

(C) दुखी होने का कारण

(D) स्वयं को जगाने का कारण

सही उत्तर: (C) दुखी होने का कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में प्रश्न का आशय।
- कुंभकरण रावण के मुख की दशा देखकर उससे उसकी व्याकुलता और उदासी का कारण पूछता है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें काव्यांश की पंक्ति 'काहे तव मुख रहे सुखाई' निर्णायक है। इसका अर्थ है कि तुम्हारा मुख क्यों सूख रहा है अथवा तुम इतने दुखी क्यों दिखाई दे रहे हो।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सीता हरण की कथा रावण बाद में बताता है; कुंभकरण सीधे उसका कारण नहीं पूछता। अपने पास आने या स्वयं को जगाने के कारण की अपेक्षा उसका प्रश्न रावण की दुखपूर्ण मुखमुद्रा पर केंद्रित है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है: दुखी होने का कारण।

त्वरित सुझाव: कुंभकरण के प्रश्न में मुख रहे सुखाई को दुखी मुखमुद्रा से जोड़ें; यही रावण के दुख का कारण पूछने का संकेत है।

4(i). संचार का सबसे प्राचीन माध्यम कौन-सा है ? [1 अंक]

(A) रेडियो

(B) दूरदर्शन

(C) सिनेमा

(D) समाचार-पत्र

सही उत्तर: (D) समाचार-पत्र

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार माध्यमों का विकास।
- दिए गए चार माध्यमों में समाचार-पत्र का विकास सबसे पहले हुआ था। यह मुद्रित माध्यम है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें रेडियो ध्वनि के प्रसारण का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है, जबकि सिनेमा और दूरदर्शन दृश्य तथा ध्वनि के माध्यम हैं। इनका विकास मुद्रित समाचार-पत्र के बाद हुआ।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें इसलिए रेडियो, दूरदर्शन और सिनेमा वाले विकल्प उपयुक्त नहीं हैं। प्रश्न का उत्तर दिए गए विकल्पों की तुलना में निर्धारित किया जाता है; इनमें समाचार-पत्र सबसे प्राचीन है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है: समाचार-पत्र।

त्वरित सुझाव: सबसे प्राचीन माध्यम पूछे जाने पर दिए गए मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के विकास-क्रम की तुलना करें।

4(ii). दूरदर्शन के लिए ख़बर लिखने की बुनियादी शर्त आप किसे मानते हैं ? [1 अंक]

(A) सरल भाषा में लेखन

(B) दृश्य के साथ लेखन

(C) कम शब्दों में लेखन

(D) ख़बर बताते हुए लेखन

सही उत्तर: (B) दृश्य के साथ लेखन

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार की दृश्यात्मकता।
- दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम है; इसलिए उसके समाचार के शब्द उपलब्ध दृश्यों के साथ संगति में लिखे जाते हैं।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें दर्शक जो दृश्य देखता है, समाचार का कथ्य उसी से जुड़ा होना चाहिए। दृश्य से असंबद्ध लेखन टेलीविजन की प्रभावशीलता घटाता है। इसीलिए दृश्य के साथ लेखन बुनियादी शर्त है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सरल भाषा और कम शब्द उपयोगी गुण हैं, किंतु वे दूसरे माध्यमों में भी आवश्यक होते हैं। खबर बताते हुए लेखन प्रस्तुति से संबंधित है; माध्यम की विशिष्ट बुनियाद दृश्य और शब्द का मेल है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: दृश्य के साथ लेखन।

त्वरित सुझाव: दूरदर्शन का प्रश्न हो तो पहले सोचें कि समाचार के शब्द स्क्रीन पर दिखाई देने वाले दृश्य से कैसे जुड़ते हैं।

4(iii). खेल जगत से जुड़ी शब्दावली का उदाहरण है : [1 अंक]

(A) स्टॉकिस्टों की चौतरफ़ा बिकवाली

(B) मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके

(C) चाँदी की चमक हुई फीकी

(D) सेंसेक्स आसमान पर

सही उत्तर: (B) मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके

हल:

अवधारणा:

- विशेषीकृत पत्रकारिता की शब्दावली।
- खेल संबंधी समाचारों में मुकाबले, जीत और हार को व्यक्त करने वाली शब्दावली तथा मुहावरे प्रयुक्त होते हैं।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें 'मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके' में घुटने टेकना पराजित होने का संकेत है। यहाँ दो देशों की टीमों के मुकाबले में एक की हार व्यक्त होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें स्टॉकिस्टों की बिकवाली व्यापार से जुड़ी है। चाँदी की चमक फीकी होना उसके बाजार-मूल्य में गिरावट का संकेत है और सेंसेक्स शेयर बाजार का सूचकांक है। इसलिए शेष तीन विकल्प आर्थिक पत्रकारिता के हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके।

त्वरित सुझाव: शब्दावली का क्षेत्र पहचानते समय हार-जीत के संकेतों को शेयर बाजार और वस्तुओं के भाव से अलग करें।

4(iv). समाचार लिखते समय मुख्यतः कितने सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है ? [1 अंक]

(A) तीन

(B) चार

(C) पाँच

(D) छह

सही उत्तर: (D) छह

हल:

अवधारणा:

- समाचार के छह ककार।
- पूर्ण समाचार पाठक को घटना से संबंधित आवश्यक जानकारियाँ देता है। इन जानकारियों को छह ककार कहते हैं।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें ये प्रश्न हैं: क्या हुआ, कब हुआ, कहाँ हुआ, कौन संबंधित है, क्यों हुआ और कैसे हुआ। इनसे घटना, समय, स्थान, व्यक्ति, कारण तथा प्रक्रिया स्पष्ट होते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें इस प्रकार सवालों की संख्या छह है। तीन, चार या पाँच चुनने से आवश्यक प्रश्नों का पूरा समूह शामिल नहीं होता। समाचार की पूर्णता के लिए सभी छह पक्षों का ध्यान रखा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है: छह।

त्वरित सुझाव: छह ककार याद रखें: क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे; फिर विकल्पों में उनकी सही संख्या चुनें।

4(v). सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को पत्रकारिता की भाषा में क्या कहते हैं ? [1 अंक]

(A) आलेख

(B) विशेष लेख

(C) स्तंभ लेख

(D) फ़ीचर

सही उत्तर: (D) फ़ीचर

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर की पहचान।
- फ़ीचर किसी विषय की सुव्यवस्थित, सृजनात्मक तथा आत्मनिष्ठ प्रस्तुति है। इसमें लेखक की संवेदना और रोचक प्रस्तुति का स्थान होता है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें प्रश्न में दिए गए तीनों गुण मिलकर फ़ीचर की पहचान बताते हैं। इसमें जानकारी को मानवीय रुचि और अनुभव से जोड़कर प्रस्तुत किया जा सकता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें आलेख में विषय का विवेचन और विचार प्रमुख होते हैं। विशेष लेख किसी विशिष्ट विषय पर केंद्रित लेख है तथा स्तंभ लेख नियमित स्तंभ से संबंधित होता है। दिए गए गुणों की संयुक्त परिभाषा का सबसे सटीक नाम फ़ीचर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है: फ़ीचर।

त्वरित सुझाव: सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ शब्द साथ आएँ तो पत्रकारिता की फ़ीचर विधा पहचानें।

---

5. दिन भर के कार्य-भार से छुट्टी पाकर जब मैं कोई लेख समाप्त करने या भाव को छंदबद्ध करने बैठती हूँ, तब छात्रावास की रोशनी बुझ चुकी है, मेरी हिरनी सोना तख्त के पैताने फर्श पर बैठ कर पागुर करना बंद कर देती है, कुत्ता बसंत छोटी मचिया पर पंजों में मुख रख कर आँखें मूँद लेता है और बिल्ली गोधूलि मेरे तकिए पर सिकुड़ कर सो रहती है।

पर मुझे रात की निस्तब्धता में अकेली न छोड़ने के विचार से कोने में दरी के आसन पर बैठकर बिजली की चकाचौंध से आँखें मिच-मिचाती हुई भक्तिन, प्रशांत भाव से जागरण करती है। वह ऊँघती भी नहीं, क्योंकि मेरे सिर उठाते ही उसकी धुँधली दृष्टि मेरी आँखों का अनुसरण करने लगती है। [5 अंक]

5(i). 'भाव को छंदबद्ध करने बैठती हूँ' — से किस प्रकार की ध्वनि निकलती है ? [1 अंक]

(A) डायरी लिखने की

(B) कविता लिखने की

(C) लेख लिखने की

(D) अनुभव लिखने की

सही उत्तर: (B) कविता लिखने की

हल:

अवधारणा:

- पाठ के संकेतों से लेखन-विधा की पहचान।
- भाव को छंदबद्ध करने का आशय भावों को छंद, लय और काव्यात्मक रूप में व्यक्त करना है। यह कविता-रचना का संकेत है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में लेखिका 'कोई लेख समाप्त करने' और 'भाव को छंदबद्ध करने' को अलग-अलग गतिविधियों के रूप में रखती हैं। इसलिए दूसरे प्रयोग को लेख-लेखन नहीं मानना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें डायरी और अनुभव सामान्यतः गद्य में लिखे जा सकते हैं; उनके लिए छंदबद्ध होना आवश्यक नहीं

है। यहाँ निर्णायक शब्द छंदबद्ध है, जो दिए गए विकल्पों में कविता लिखने की ओर स्पष्ट संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: कविता लिखने की।

त्वरित सुझाव: रचना की विधा पहचानते समय छंद, लय और पद्य जैसे संकेतों को कविता से जोड़ें।

5(ii). 'तब छात्रावास की रोशनी बुझ चुकी है' — पंक्ति का आशय है : [1 अंक]

(A) बिजली गुल होना

(B) रात अधिक होना

(C) अँधेरा होना

(D) छात्रावास में बिजली का न होना

सही उत्तर: (B) रात अधिक होना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार वाक्य का आशय।
- पंक्ति का अर्थ आसपास के प्रसंग के साथ समझना चाहिए। यहाँ छात्रावास की रोशनी बुझना रात के अधिक हो जाने का संकेत है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें लेखिका दिन का काम समाप्त करके लिखने बैठती हैं और हिरनी, कुत्ता तथा बिल्ली भी विश्राम करने लगते हैं। इन विवरणों से देर रात का समय स्पष्ट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें बिजली गुल होने या छात्रावास में बिजली न होने की बात नहीं है, क्योंकि आगे बिजली की चकाचौंध का उल्लेख है। केवल अँधेरा होना व्यापक समय-संकेत को नहीं बताता। इसलिए आशय रात अधिक होना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: रात अधिक होना।

त्वरित सुझाव: छात्रावास की बुझी रोशनी को पशुओं के सो जाने से जोड़ें; आगे बिजली की चकाचौंध बिजली गुल होने के विकल्प को काटती है।

5(iii). गद्यांश के अनुसार लेखिका का जानवरों के प्रति किस प्रकार का भाव अभिव्यक्त हो रहा है ? [1 अंक]

(A) प्रेम का

(B) वात्सल्य का

(C) करुणा का

(D) दया का

सही उत्तर: (A) प्रेम का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वर्णित व्यवहार से लेखिका की भावना पहचानी जाती है।
- पशुओं को नाम देना और अपने निकट स्थान देना उनके प्रति आत्मीय प्रेम व्यक्त करता है।

चरण 1: अंश के विवरण पहचानें लेखिका हिरनी सोना, कुत्ते बसंत और बिल्ली गोधूलि का नाम लेकर उनके बैठने और सोने के स्थान बताती हैं। पशु उनके तख्त, छोटी मचिया और तकिए के निकट सहज रूप से विश्राम करते हैं। यह निकटता उनके प्रति प्रेमपूर्ण आत्मीय संबंध प्रकट करती है।

चरण 2: अन्य भावों से अंतर करें वात्सल्य विशेष रूप से अभिभावक जैसी ममता का भाव है; यहाँ छोटे शिशु जैसी देखभाल का वर्णन नहीं है। करुणा और दया का आधार पीड़ा, दुःख या असहायता होती है, जबकि अंश में पशु शांत और सुरक्षित हैं। इसलिए वर्णन से सीधे व्यक्त होने वाला व्यापक भाव प्रेम है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है: प्रेम का।

त्वरित सुझाव: भाव पहचानते समय अंश में दिखाई देने वाले संबंध को आधार बनाएँ; शांत आत्मीय निकटता प्रेम का संकेत है।

5(iv). रात अधिक हो जाने के बाद भी भक्तिन जागने का प्रयास क्यों करती रहती थी ? [1 अंक]

(A) जानवरों तथा लेखिका की देख-रेख के लिए

(B) रोशनी में नींद नहीं आने से

(C) लेखिका की जरूरत को पूरा करने के लिए

(D) लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से

सही उत्तर: (D) लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष कथन से कारण पहचानना।
- कारण पूछने वाले प्रश्न में पहले गद्यांश के सीधे कथन को आधार बनाना चाहिए। भक्तिन के जागने का कारण लेखिका को अकेला न छोड़ना है।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में स्पष्ट है: 'पर मुझे रात की निस्तब्धता में अकेली न छोड़ने के विचार से' भक्तिन जागरण करती है। यह उसके आत्मीय साथ और सजग उपस्थिति को दर्शाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें जानवरों की देख-रेख का कारण यहाँ नहीं दिया गया। रोशनी से आँखें मिचमिचाना उसकी असुविधा है, जागने का कारण नहीं। जरूरत पूरी करना संभावित सामान्य सेवा है, पर इस अंश का स्पष्ट और विशिष्ट कारण अकेला न छोड़ना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है: लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से।

त्वरित सुझाव: भक्तिन के जागने का कारण खोजते समय अकेली न छोड़ने के विचार से पर ध्यान दें; आँखें मिचमिचाना कारण नहीं है।

5(v). गद्यांश के अनुसार भक्तिन का लेखिका के प्रति किस प्रकार का भाव अभिव्यक्त होता है ? [1 अंक]

(A) सहयोग का भाव

(B) दास्य भाव

(C) स्वामी-भक्ति

(D) समर्पण का भाव

सही उत्तर: (D) समर्पण का भाव

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भक्तिन के व्यवहार से व्यक्त आत्मीय संबंध को पहचानना है।
- भक्तिन अपनी सुविधा और विश्राम से ऊपर लेखिका के साथ रहने को रखती है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान सभी जीव सो जाते हैं, फिर भी भक्तिन जागती रहती है ताकि लेखिका को अकेलापन न लगे।

आँखों में प्रकाश चुभने पर भी वह शिकायत नहीं करती। यह बिना किसी अपेक्षा के लेखिका के लिए अपने सुख का त्याग है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सहयोग उनके व्यवहार का एक पक्ष है, पर भाव की संपूर्णता नहीं बताता। (B) दास्य में अधीनता और (C) स्वामी-भक्ति में मालिक के प्रति निष्ठा प्रमुख होती है। यहाँ आत्मीयता से प्रेरित पूर्ण समर्पण अधिक उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: समर्पण का भाव।

त्वरित सुझाव: किसी भाव का चयन करते समय व्यवहार का उद्देश्य और उसके पीछे का त्याग देखिए।

6(i). जब यशोधर पंत ने अपने आखिरी फ़ाइल का फीता बाँधा था तब घड़ी में क्या समय हो रहा था ? [1 अंक]

(A) पाँच बजकर चालीस मिनट

(B) पाँच बजकर तीस मिनट

(C) पाँच बजकर पच्चीस मिनट

(D) पाँच बज रहे थे

सही उत्तर: (C) पाँच बजकर पच्चीस मिनट

हल:

अवधारणा:

- कथा के आरंभ में दीवार घड़ी और कलाई घड़ी के समय का अंतर महत्वपूर्ण है।
- प्रश्न आखिरी फ़ाइल बाँधने के समय दफ्तर की घड़ी का समय पूछता है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान यशोधर पंत जब अंतिम फ़ाइल का फीता बाँधकर मेज से निगाह उठाते हैं, तब दफ्तर की पुरानी दीवार घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट होते हैं। उनकी अपनी कलाई घड़ी का समय उससे अलग होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) पाँच बजकर चालीस मिनट का समय इस प्रसंग में नहीं है। (B) साढ़े पाँच उनकी कलाई घड़ी का समय है। (D) पाँच बजे दफ्तर छूटने का निर्धारित समय है; यह फ़ाइल बाँधने के तत्काल बाद का समय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: पाँच बजकर पच्चीस मिनट।

त्वरित सुझाव: दीवार घड़ी के पाँच पच्चीस और कलाई घड़ी के साढ़े पाँच को अलग याद रखिए।

6(ii). 'जूझ' कहानी के लेखक का मन कहाँ जाने के लिए तड़पता था ? [1 अंक]

(A) सिनेमा जाने

(B) खेलने जाने

(C) खेत में जाने

(D) पाठशाला जाने

सही उत्तर: (D) पाठशाला जाने

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक प्रसंग में शिक्षा पाने की तीव्र इच्छा केंद्रीय है।
- लेखक खेत के काम के बीच भी पढ़ाई में लौटने की इच्छा रखता है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान पढ़ाई रुक जाने से लेखक बेचैन है। उसे लगता है कि शिक्षा से उसका जीवन बदल सकता है।

इसलिए उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता है। यह केवल घर से बाहर निकलने की इच्छा नहीं, सीखने की ललक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सिनेमा और (B) खेलने जाना मनोरंजन की इच्छाएँ हैं, जबकि इस प्रसंग का केंद्र पढ़ाई है। (C) खेत में जाना भी उचित नहीं है, क्योंकि खेत का श्रम तो उसके जीवन में पहले से है और वही पढ़ाई में बाधा बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: पाठशाला जाने।

त्वरित सुझाव: जूझ के शिक्षा संबंधी प्रश्नों में लेखक की पढ़ने की ललक को उसके खेत के श्रम से जोड़िए।

6(iii). 'मुअनजो-दड़ो' और 'हड़प्पा' को सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व दौर का शहर क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) सबसे पुराने होने से
(B) पूर्ण विकसित होने से
(C) सबसे उत्कृष्ट होने से
(D) बहुत बड़ा होने से

सही उत्तर: (B) पूर्ण विकसित होने से

हल:

अवधारणा:

- परिपक्वता का आशय सभ्यता के विकसित और व्यवस्थित रूप से है।
- मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा में नगर जीवन का विकसित रूप मिलता है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान इन नगरों की योजनाबद्ध बसावट, सड़कों, भवनों और जल निकासी की व्यवस्था विकसित नगरीय संस्कृति का संकेत देती है। इसलिए इन्हें सभ्यता के परिपक्व दौर के शहर कहा गया है। परिपक्व शब्द विकास की अवस्था बताता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) प्राचीन होना केवल समय से जुड़ी विशेषता है। (C) सबसे उत्कृष्ट कहना तुलनात्मक प्रशंसा है, पर परिपक्व का निश्चित अर्थ नहीं। (D) नगर का बड़ा आकार भी अपने आप में पूर्ण विकास का प्रमाण नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: पूर्ण विकसित होने से।

त्वरित सुझाव: परिपक्व शब्द को पुराना या बड़ा समझने के स्थान पर विकसित और सुव्यवस्थित से जोड़िए।

6(iv). 'मुअनजो-दड़ो' को छोटे-मोटे टीलों पर आबाद क्यों किया गया था ? [1 अंक]

(A) पहाड़ी इलाका होने से
(B) बाढ़ से बचने के लिए
(C) दूर से दिखने के लिए
(D) बड़ा शहर होने से

सही उत्तर: (B) बाढ़ से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- नगर की ऊँची बसावट को उसके भौगोलिक परिवेश और सुरक्षा की आवश्यकता से जोड़ना है।
- सिंधु नदी के क्षेत्र में बाढ़ का खतरा नगर के लिए महत्वपूर्ण था।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान मुअनजो-दड़ो को ऊँचे छोटे-मोटे टीलों पर बसाने का उद्देश्य बाढ़ के पानी से बचाव था। ऊँची भूमि

पर बसे भवन और आवास सामान्य निचली भूमि की अपेक्षा जलभराव से अधिक सुरक्षित रह सकते थे।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) पहाड़ी इलाका होने का कारण पाठ में नहीं दिया गया है। (C) दूर से दिखना नगर बसाने का सुरक्षा संबंधी उद्देश्य नहीं है। (D) बड़ा शहर होने से अपने आप ऊँची भूमि पर बसना आवश्यक नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: बाढ़ से बचने के लिए।

त्वरित सुझाव: नदी के पास ऊँची बसावट का कारण पूछे जाने पर बाढ़ से सुरक्षा के संकेत को पहचानिए।

6(ix). वसंत पाटील का कक्षा में सम्मान क्यों था ? [1 अंक]

(A) वह मॉनीटर था

(B) कक्षा में आगे बैठता था

(C) पढ़ने में होशियार एवं शांत था

(D) मास्टरों का लाड़ला था

सही उत्तर: (C) पढ़ने में होशियार एवं शांत था

हल:

अवधारणा:

- कक्षा में सम्मान का मूल कारण विद्यार्थी के गुण और आचरण होते हैं।
- वसंत पाटील पढ़ाई में कुशल और स्वभाव से शांत था।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान वसंत लगन से पढ़ता था, प्रश्न हल करने में होशियार था और अनावश्यक शरारत से दूर रहता था। उसकी अध्ययनशीलता और शांत व्यवहार से शिक्षक तथा सहपाठी उसे महत्व देते थे। लेखक भी उससे प्रेरणा प्राप्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) मॉनीटर होना एक पद है; सम्मान के पीछे उसकी योग्यता और व्यवहार का महत्व है। (B) आगे बैठना मात्र बैठने की जगह बताता है। (D) मास्टरों का लाड़ला होना परिणाम हो सकता है, पर सम्मान का मूल कारण नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: पढ़ने में होशियार एवं शांत था।

त्वरित सुझाव: सम्मान का कारण पूछे जाने पर पद या बैठने की जगह के बजाय पात्र के गुण खोजिए।

6(v). 'जूझ' कहानी में लेखक सुबह-शाम खेत पर, ढोर चराते आदि समय भी कविताओं में क्यों रमे रहते थे ? [1 अंक]

(A) अपने शिक्षक से प्रभावित होने से

(B) खेत पर अकेले होने से

(C) कविता याद करने के लिए

(D) कविताओं में मन रमने से

सही उत्तर: (A) अपने शिक्षक से प्रभावित होने से

हल:

अवधारणा:

- शिक्षक का सजीव कविता पाठ विद्यार्थी की रचनात्मक रुचि जगा सकता है।
- लेखक के कविता प्रेम को उसके शिक्षक की प्रेरणा से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान सौंदलगेकर मास्टर कविता को लय, भाव और तन्मयता के साथ पढ़ाते थे। उनके इस ढंग ने लेखक

पर गहरा प्रभाव डाला। यही प्रेरणा खेत में काम करते और ढोर चराते समय भी उसे कविताएँ गाने तथा उनमें रमने की ओर ले गई।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) अकेलापन इस रचनात्मक रुचि का मूल कारण नहीं है। (C) केवल कविता याद करना लेखक के आनंद और सृजन की इच्छा को सीमित कर देता है। (D) कविताओं में मन रमना उसी स्थिति का वर्णन है जिसका कारण प्रश्न पूछ रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: अपने शिक्षक से प्रभावित होने से।

त्वरित सुझाव: कविताओं में निरंतर रमने की स्थिति का मूल कारण सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा में खोजिए।

6(vi). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना हो सकती है : [1 अंक]

(A) मानवीय मूल्यों का संकट

(B) पीढ़ी का अंतराल

(C) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(D) पारिवारिक असहमति

सही उत्तर: (B) पीढ़ी का अंतराल

हल:

अवधारणा:

- कहानी की मूल संवेदना पहचानने के लिए विभिन्न प्रसंगों को जोड़ने वाला केंद्रीय संघर्ष देखना चाहिए।
- यशोधर बाबू और उनके परिवार की नई पीढ़ी के सोचने के ढंग अलग हैं।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान यशोधर बाबू पुराने जीवन मूल्यों और किशनदा की परंपरा से जुड़े हैं। उनके बच्चे आधुनिक रहन-सहन और उत्सव की नई पद्धति अपनाते हैं। विवाह की वर्षगाँठ का आयोजन भी इसी मानसिक दूरी को उभारता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) मूल्यों का संकट, (C) पाश्चात्य प्रभाव और (D) पारिवारिक असहमति कथा में जुड़े हुए पक्ष हैं। पर इन सभी को व्यापक रूप से जोड़ने वाला सूत्र पुरानी और नई पीढ़ी की दृष्टियों का अंतर है। इसलिए ये मूल संवेदना का उतना समग्र नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: पीढ़ी का अंतराल।

त्वरित सुझाव: मूल संवेदना वाले प्रश्न में ऐसा विकल्प चुनिए जो कहानी के अधिकतर प्रसंगों को एक सूत्र में बाँधे।

6(vii). 'जब चारों ओर कोल्हू चलने लगते तो बाज़ार में गुड़ की बहुतायत हो जाती और भाव नीचे उतर आते' — पंक्ति से यह पता चलता है कि : [1 अंक]

(A) कोल्हू अधिक चलने पर गुड़ अधिक बनता है

(B) उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है

(C) गुड़ अधिक हो जाने पर माँग कम होती है

(D) भाव पर गुड़ का उत्पादन निर्भर रहता है

सही उत्तर: (B) उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है

हल:

अवधारणा:

- कथन में अधिक उत्पादन से वस्तु की उपलब्धता और उसके भाव पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना है।
- पंक्ति गुड़ की बहुतायत के बाद भाव नीचे आने की बात करती है।

चरण 1: प्रसंग और अर्थ की पहचान अनेक कोल्हू चलने से गुड़ का उत्पादन बढ़ता है। बाजार में गुड़ अधिक उपलब्ध हो जाता है और उसका मूल्य गिरता है। दिए गए कथन का मुख्य निष्कर्ष उत्पादन बढ़ने और भाव कम होने के बीच संबंध है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गुड़ अधिक बनना कथन का आरंभिक तथ्य है, पूरा निष्कर्ष नहीं। (C) अधिक गुड़ होने से माँग कम हो गई, ऐसा पंक्ति नहीं कहती। (D) में कारण और परिणाम उलट गए हैं; यहाँ उत्पादन बढ़ने के कारण भाव घटते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है।

त्वरित सुझाव: कथन के दोनों हिस्से जोड़कर कारण और परिणाम पहचानिए; केवल पहले तथ्य पर मत रुकिए।

6(viii). 'मुअनजो-दड़ो' के बारे में धारणा है कि 'अपने दौर में वह सिंधु घाटी की सभ्यता का केन्द्र रहा होगा' — पंक्ति में 'केंद्र' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) प्रमुख गाँव

(B) राजधानी

(C) व्यवसायिक-स्थल

(D) शिक्षा-स्थल

सही उत्तर: (B) राजधानी

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित होता है। यहाँ 'केंद्र' का प्रयोग सभ्यता के प्रमुख नगर के लिए हुआ है।
- दिए गए विकल्पों में 'राजधानी' इस केंद्रीय महत्त्व को सबसे उपयुक्त रूप से व्यक्त करती है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझना मुअनजो-दड़ो को अपने दौर में सिंधु घाटी की सभ्यता का केंद्र कहा गया है। इसका आशय उस सभ्यता में उसके प्रमुख और केंद्रीय स्थान से है। दिए गए उत्तरों में विकल्प (B), 'राजधानी', इसी आशय के अनुरूप है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) का 'प्रमुख गाँव' मुअनजो-दड़ो के विकसित नगरीय स्वरूप के अनुरूप नहीं है। विकल्प (C) उसे केवल व्यवसाय से और विकल्प (D) केवल शिक्षा से जोड़ देता है। पंक्ति किसी एक गतिविधि के स्थल की बात नहीं करती, बल्कि पूरी सभ्यता में नगर के केंद्रीय महत्त्व को व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (B), 'राजधानी', है।

त्वरित सुझाव: 'सभ्यता का केंद्र' पढ़ते समय पूरे नगर के महत्त्व को देखें; अर्थ को केवल व्यापार या शिक्षा तक सीमित न करें।

6(x). 'ड्रेसिंग गाउन' पहनते हुए यशोधर बाबू की आँखों में नमी क्यों आ गई थी ? [1 अंक]

(A) भूषण के व्यवहार के कारण

(B) किशनदा के याद आने के कारण

(C) केवल (a)

(D) (a) और (b) दोनों

सही उत्तर: (D) (a) और (b) दोनों

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की भावुकता को समझने के लिए बेटे भूषण के व्यवहार और किशनदा की स्मृति, दोनों को साथ देखना आवश्यक है।
- कहानी में उपहार से उत्पन्न प्रसन्नता के साथ आत्मीयता की कमी का बोध भी जुड़ा है।

चरण 1: भूषण के व्यवहार का प्रभाव भूषण ने पिता को ड्रेसिंग गाउन दिया, किंतु उसके उपयोग को सुबह दूध लाने जाने से जोड़ दिया। यशोधर बाबू को यह बात खली कि बेटा स्वयं दूध लाने का दायित्व लेने की आत्मीय बात नहीं कह रहा। उपहार के साथ जुड़ा यह व्यवहार उनकी आँखें नम होने का एक कारण था।

चरण 2: किशनदा की स्मृति और विकल्पों की जाँच इस प्रसंग में उन्हें किशनदा की आत्मीयता भी याद आती है। अपने प्रति स्नेह और देखभाल की अपेक्षा के बीच उनका स्मरण भावुक कर देता है। इसलिए (A) और (B) अलग-अलग एक-एक कारण बताते हैं; (C) केवल पहले कारण को स्वीकार करके उत्तर अधूरा रखता है। (D) दोनों कारणों को सम्मिलित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर विकल्प (D) है; दोनों कारण उनकी भावुकता से जुड़े हैं।

त्वरित सुझाव: ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग में उपहार के साथ कही गई दूध लाने की बात और किशनदा की स्मृति को एक साथ जोड़कर उत्तर चुनें।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

साइकिल का पंचर लगाता बच्चा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दृश्य, पात्र और संवेदना के माध्यम से विषय को जीवंत बनाया जाता है। यहाँ एक श्रमरत बच्चे का चित्र बालश्रम और शिक्षा के प्रश्न से जुड़ता है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त आरंभ, घटनापूर्ण मध्य और प्रभावपूर्ण अंत होना चाहिए। भाषा स्वाभाविक रहे और शीर्षक विषय के अनुकूल हो।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण लेख का शीर्षक 'साइकिल का पंचर लगाता बच्चा' रखें। किसी राहगीर की दृष्टि से बच्चे को देखते हुए दृश्य प्रस्तुत किया जा सकता है। औपचारिक पत्र की तरह पता, संबोधन या समापन न दें। बच्चे की दशा के प्रति संवेदना व्यक्त हो, किंतु पूरी रचना केवल उपदेश न बने। उसके हाथों की कुशलता और आँखों की आकांक्षा के बीच संबंध लेख को प्रभावी बनाएगा।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना शुरुआत सड़क किनारे की दुकान तथा काम करते बच्चे के दृश्य से करें। फिर ट्यूब में छेद ढूँढ़ने की क्रिया, स्कूल जाते बच्चों की ओर उसकी दृष्टि और शिक्षा पाने की इच्छा दिखाएँ। अंत में पंचर जुड़ने की घटना को उसके टूटते सपनों से जोड़ें। वास्तविक लगने वाले छोटे विवरण पर्याप्त हैं; अनावश्यक घटनाओं और लंबी बातचीत से बचें। नीचे दिए गए नमूने का मुख्य लेख लगभग 120 शब्दों में है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **साइकिल का पंचर लगाता बच्चा**

सड़क के किनारे एक छोटी-सी दुकान पर वह बच्चा साइकिल का पंचर लगा रहा था। उसके मैले हाथ पानी में डूबी ट्यूब के बुलबुले खोज रहे थे। पास से विद्यालय जाते बच्चे निकले तो उसकी आँखें क्षणभर उनके बस्तों पर टिक गईं। फिर उसने सिर झुका लिया। मैंने पूछा,

"पढ़ते हो?" वह मुसकराया, "पहले पढ़ता था, अब पिताजी बीमार हैं।" उसके स्वर में शिकायत नहीं थी, पर अधूरा सपना साफ सुनाई देता था। थोड़ी देर में साइकिल चलने योग्य हो गई। मैंने पैसे दिए और सोचा, यह बच्चा दूसरों के पहियों को गति देता है, लेकिन इसकी अपनी जिंदगी क्यों ठहरी है? इसके हाथों में औजार के साथ किताब भी होनी चाहिए। बचपन को मजदूरी नहीं, सीखने और खेलने का अवसर चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख बच्चे के श्रम का सजीव दृश्य प्रस्तुत करते हुए उसकी शिक्षा और बचपन के अधिकार के प्रति संवेदना जगाता है।

त्वरित सुझाव: पंचर लगाने की किसी ठोस क्रिया से दृश्य शुरू करें और अंत में बच्चे की पढ़ाई की आकांक्षा जोड़ें; केवल बालश्रम पर सामान्य भाषण न लिखें।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मैं मतदान करने गया [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मतदान के निजी अनुभव को घटनाक्रम, वातावरण और नागरिक उत्तरदायित्व से जोड़कर प्रस्तुत करना।
- रचनात्मक लेख में आरंभ जिज्ञासा जगाता है, मध्य घटना को विकसित करता है और अंत अनुभव का अर्थ स्पष्ट करता है। वर्णन विषय से जुड़ा और भाषा सहज होनी चाहिए।

चरण 1: विषय और घटनाक्रम की योजना पहले मतदान का उत्साह और मतदान केंद्र का वातावरण रखें। फिर पहचान की जाँच, स्याही लगने और मतदान करने का क्रम बताएँ। अंत में लोकतंत्र में अपनी भागीदारी का बोध व्यक्त करें।

चरण 2: प्रस्तुति और भाषा का चयन शीर्षक के बाद प्रथम पुरुष में लेख लिखें। घटना सुबह से मतदान के बाद तक क्रम से आगे बढ़े। भाषा अनुभवपरक हो; राजनीतिक दल के प्रचार के स्थान पर स्वतंत्र और जिम्मेदार नागरिक की भावना सामने आए। लेख को सामान्य उपदेशों की सूची न बनाएँ। घटना के दौरान दिखाई देने वाली वस्तुओं, लोगों की प्रतिक्रियाओं और अपनी अनुभूति का संतुलित उपयोग करें। एक ही बात की पुनरावृत्ति से बचते हुए अंतिम वाक्य को अनुभव से स्वाभाविक रूप से जोड़ें। नीचे दिए नमूने में शीर्षक के बाद केवल लेख का मूल पाठ है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख मैं मतदान करने गया

आज पहली बार मतदान करने का अवसर मिला। सुबह पहचानपत्र लेकर मतदान केंद्र पहुँचा तो मन में उत्साह और थोड़ी झिझक थी। बाहर बुजुर्ग, युवा और महिलाएँ अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। धूप तेज थी, फिर भी सबके चेहरों पर प्रसन्नता थी। एक वृद्ध को देखकर लगा कि लोकतंत्र के प्रति उनका विश्वास कितना गहरा है! भीतर अधिकारी ने मेरा नाम जाँचा और उँगली पर स्याही लगाई। मतदान करते समय मैंने उम्मीदवारों के काम और योग्यता को याद किया। बटन दबाते ही लगा, देश के भविष्य में मेरी भी भागीदारी है। बाहर निकला तो स्याही लगी उँगली गर्व से देखी। घर लौटते हुए तय किया कि हर चुनाव में सोचकर मतदान करूँगा और मित्रों को भी प्रेरित करूँगा।

चरण 4: निष्कर्ष लेख मतदान के प्रथम अनुभव को उत्साह, प्रक्रिया और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: मतदान केंद्र की एक दृश्यात्मक झलक दें और स्याही लगी उँगली के माध्यम से अंत में नागरिक गर्व उभारें।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
जब मेट्रो रेल की बिजली गुल हुई [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अचानक घटी घटना को दृश्य, भावनात्मक बदलाव और सार्थक अंत के साथ रचनात्मक रूप देना।
- रचनात्मक लेख में आरंभ जिज्ञासा जगाता है, मध्य घटना को विकसित करता है और अंत अनुभव का अर्थ स्पष्ट करता है। वर्णन विषय से जुड़ा और भाषा सहज होनी चाहिए।

चरण 1: विषय और घटनाक्रम की योजना चलती मेट्रो का सामान्य दृश्य लें। बिजली गुल होते ही यात्रियों की प्रतिक्रियाएँ दिखाएँ। कर्मचारियों की सूचना और यात्रियों के सहयोग के बाद स्थिति सामान्य होने पर अनुभव का निष्कर्ष दें।

चरण 2: प्रस्तुति और भाषा का चयन शीर्षक सहित प्रथम पुरुष में घटना लिखें। घबराहट से धैर्य की ओर मन:स्थिति का बदलाव दिखाएँ। संवाद छोटा रखें और घटना को लगभग 120 शब्दों में समेटें; अनावश्यक तकनीकी विवरण से बचें। लेख को सामान्य उपदेशों की सूची न बनाएँ। घटना के दौरान दिखाई देने वाली वस्तुओं, लोगों की प्रतिक्रियाओं और अपनी अनुभूति का संतुलित उपयोग करें। एक ही बात की पुनरावृत्ति से बचते हुए अंतिम वाक्य को अनुभव से स्वाभाविक रूप से जोड़ें। नीचे दिए नमूने में शीर्षक के बाद केवल लेख का मूल पाठ है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख जब मेट्रो रेल की बिजली गुल हुई
कॉलेज से लौटते समय मैं मेट्रो में खिड़की के पास खड़ा था। अचानक रोशनी बुझी और गाड़ी झटके से रुक गई। कुछ पल सन्नाटा छाया, फिर यात्रियों की बेचैन आवाजें सुनाई देने लगीं। किसी ने मोबाइल की रोशनी जलाई तो किसी ने बच्चे को गोद में उठा लिया। आपातकालीन रोशनी जलते ही थोड़ा भरोसा लौटा। एक बुजुर्ग घबरा रहे थे; मैंने उन्हें अपनी पानी की बोतल दी। तभी घोषणा हुई कि तकनीकी समस्या दूर की जा रही है और सभी शांत रहें। लोग दरवाजों से हटकर खड़े हो गए। कुछ देर बाद रोशनी लौटी और मेट्रो चल पड़ी। यात्रियों के चेहरों पर राहत थी। उस छोटी घटना ने सिखाया कि संकट में धैर्य और सहयोग सबसे बड़ा सहारा हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेख अचानक उत्पन्न संकट, यात्रियों की प्रतिक्रियाओं और सहयोग से मिली राहत को क्रमबद्ध ढंग से व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: अँधेरे और बेचैन आवाजों का छोटा दृश्य रचें; फिर घोषणा, सहयोग और राहत के क्रम में घटना को पूरा करें।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
कठपुतली का नाच [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में प्रत्यक्ष अनुभव, दृश्यात्मक वर्णन और व्यक्तिगत अनुभूति से साधारण विषय को जीवंत बनाया जाता है।
- कठपुतली के नाच का वर्णन करते समय रंग, गति, ध्वनि और दर्शकों की प्रतिक्रिया को एक सूत्र में जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना लेख को एक उपयुक्त शीर्षक दें। आरंभ में मेले का वातावरण रखें, मध्य में कठपुतलियों की पोशाक और नृत्य का दृश्य उभारें तथा अंत में कलाकार की मेहनत के प्रति संवेदना व्यक्त करें। लगभग 120 शब्दों के लेख में अनावश्यक भूमिका और तथ्यात्मक विवरण से बचें। वर्णन को कथानक की छोटी घटना से जोड़ने पर लेख स्वाभाविक बनेगा। दर्शक की दृष्टि अपनाकर पहले आकर्षण, फिर विस्मय और अंत में कलाकार के प्रति सम्मान दिखाएँ। भावनाओं का यह क्रम लेख को एकता देता है।

चरण 2: अभिव्यक्ति का चुनाव केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि कठपुतलियाँ नाच रही थीं। डोरियों के हिलने, घाघरे के घूमने, ढोलक की थाप और बच्चों की हँसी का वर्णन दृश्य को सजीव बनाता है। अंतिम अनुभूति इसी देखे गए दृश्य से निकलनी चाहिए।

चरण 3: संपूर्ण नमूना लेख **कठपुतली का नाच**
मेले के एक कोने से आती ढोलक की थाप ने मेरे कदम रोक लिए। छोटे से रंगीन मंच पर कठपुतलियों का नाच शुरू हो रहा था। चमकीले

घाघरे वाली रानी घूमी तो लगा जैसे रंगों का चक्र खुल गया हो। मूँछों वाला राजा सिर हिलाता हुआ आगे आया। बच्चों की हँसी और तालियों से वातावरण गूँज उठा। पर्दे के पीछे छिपे कलाकार की उँगलियाँ डोरियों में जीवन भर रही थीं। लकड़ी के चेहरे भी मानो हँसते और रूठते दिखाई देते थे। खेल समाप्त हुआ तो मैंने कलाकार के थके हाथ देखे। हमारी थोड़ी देर की खुशी के पीछे उसका वर्षों का अभ्यास था। लौटते समय लगा कि इन नन्ही कठपुतलियों में लोककला की बड़ी दुनिया बसी है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में मेले के दृश्य से आरंभ करके कठपुतलियों के नृत्य और कलाकार के श्रम तक अनुभव को क्रमबद्ध किया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले दृश्य, फिर नाच की दो सजीव झलकियाँ और अंत में अपनी अनुभूति लिखें; लेख को केवल सूचना का विवरण न बनने दें।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय हमें किस प्रकार की सावधानियाँ रखनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी का नाट्य रूपांतरण वर्णनात्मक कथा को मंच पर प्रस्तुत किए जा सकने वाले दृश्यों और संवादों में बदलना है।
- रूपांतरण में मूल संवेदना सुरक्षित रखते हुए अभिनय, संवाद, दृश्य-विभाजन और मंचीय व्यवहार्यता का ध्यान रखा जाता है।

चरण 1: मुख्य सावधानियाँ पहचानना कहानी में कथावाचक जिन बातों को बताता है, नाटक में उन्हें पात्रों के व्यवहार, संवाद और मंच-निर्देशों से दिखाना पड़ता है। इसलिए कथा को शब्दशः संवादों में बदलना पर्याप्त नहीं। पात्रों के संबंध, संघर्ष और घटनाओं का क्रम स्पष्ट रहे। अनावश्यक पात्र तथा मंच पर असंभव दृश्य घटाए जा सकते हैं, किंतु मूल आशय विकृत नहीं होना चाहिए। कथावाचक के लंबे विवरण की जगह पात्रों की छोटी क्रियाएँ रखें। प्रवेश, प्रस्थान और ध्वनि-संकेत ऐसे हों जिन्हें रंगमंच पर निभाया जा सके। भाषा पात्र की आयु और सामाजिक स्थिति के अनुरूप रखें।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय मूल कथ्य और संवेदना सुरक्षित रखनी चाहिए। कथानक को मंचनीय दृश्यों में बाँटकर वर्णन को संवाद तथा अभिनय में बदलें। संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक और पात्रानुकूल हों। पात्रों, समय और स्थान का संयोजन मंच की सीमाओं के अनुरूप हो। मंच-निर्देश स्पष्ट हों तथा अनावश्यक घटनाएँ हटाते समय कहानी का मूल उद्देश्य न बदले।

चरण 3: निष्कर्ष मूल कथ्य की रक्षा और प्रभावी मंचीय प्रस्तुति के संतुलन से सफल नाट्य रूपांतरण होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मूल संवेदना, दृश्य-विभाजन, पात्रानुकूल संवाद और मंच की सीमाएँ अवश्य शामिल करें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

रेडियो पर किस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं ? 19वीं शताब्दी में इसकी लोकप्रियता का क्या कारण था ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य जनसंचार माध्यम है; उसके कार्यक्रम शब्द, स्वर, संगीत और ध्वनि के माध्यम से श्रोता तक पहुँचते हैं।
- लोकप्रियता का कारण बताते समय व्यापक पहुँच, सरल ग्रहणशीलता और कम लागत को कार्यक्रमों की विविधता से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: कार्यक्रम और काल-संदर्भ स्पष्ट करना रेडियो पर समाचार, वार्ताएँ, साक्षात्कार, परिचर्चाएँ, संगीत, नाटक, खेलों का विवरण तथा कृषि, शिक्षा और जनहित के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। प्रश्न में उल्लिखित 19वीं शताब्दी रेडियो की जनसंचार माध्यम के रूप में लोकप्रियता का उचित काल नहीं है। रेडियो का व्यापक प्रसारण और जनप्रियता 20वीं शताब्दी में विकसित हुई। इसलिए उत्तर में मुद्रित काल-संदर्भ को ऐतिहासिक तथ्य समझकर दोहराना उचित नहीं होगा।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो पर समाचार, संगीत, नाटक, वार्ता, साक्षात्कार, खेल-विवरण तथा शैक्षिक और कृषि कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इसकी व्यापक लोकप्रियता 19वीं नहीं, 20वीं शताब्दी में हुई। कम खर्च, दूरदराज तक पहुँच, निरक्षर लोगों के लिए भी उपयोगिता और काम करते हुए सुनने की सुविधा इसके प्रमुख कारण थे। इसने सूचना तथा मनोरंजन को बड़े जनसमुदाय तक पहुँचाया। श्रव्य होने से पढ़ना जानना आवश्यक नहीं था।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो कार्यक्रमों की विविधता, कम लागत और व्यापक श्रव्य पहुँच के कारण लोकप्रिय हुआ; इसकी व्यापक जनप्रियता का काल 20वीं शताब्दी है।

त्वरित सुझाव: कार्यक्रमों के उदाहरण देने के बाद लोकप्रियता के कारण लिखें और मुद्रित 19वीं शताब्दी के स्थान पर ऐतिहासिक काल स्पष्ट करें।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

लेखन से आप क्या समझते हैं ? लेखन के लिए अभ्यास क्यों आवश्यक है और कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखन विचारों, अनुभवों, भावों और सूचनाओं को भाषा के माध्यम से सुव्यवस्थित लिखित रूप देने की प्रक्रिया है। इसमें विषय के साथ अभिव्यक्ति का ढंग भी महत्त्वपूर्ण होता है।
- अभ्यास से भाषा, विचारों की क्रमबद्धता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता विकसित होती है। नियमित लेखन के साथ अपने लिखे को पढ़ना और सुधारना भी अभ्यास का हिस्सा है।

चरण 1: उत्तर की विषयवस्तु तय करना प्रश्न के तीन पक्ष हैं: लेखन का अर्थ, अभ्यास की आवश्यकता और अभ्यास की विधि। उत्तर में केवल लेखन की परिभाषा देना पर्याप्त नहीं है। यह बताना भी आवश्यक है कि अभ्यास विचारों को सुसंगत और भाषा को सहज बनाता है।

चरण 2: अभ्यास की प्रक्रिया समझना किसी घटना को देखकर उसके मुख्य बिंदु लिखना, उनका क्रम तय करना और फिर अनुच्छेद बनाना उपयोगी अभ्यास है। पहले मसौदे के बाद अस्पष्ट शब्द, दोहराव और असंगत वाक्य हटाने से लेखन निखरता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर अपने विचारों, अनुभवों तथा भावनाओं को सुव्यवस्थित भाषा में लिखित रूप देना लेखन है। अभ्यास से विचारों में स्पष्टता, भाषा में प्रवाह और अभिव्यक्ति में प्रभाव आता है। इसके लिए नियमित पढ़ना, आसपास की घटनाओं का अवलोकन करना और प्रतिदिन किसी विषय पर लिखना चाहिए। अपने लिखे को दोबारा पढ़कर भाषा, क्रम और अनावश्यक विस्तार की त्रुटियाँ सुधारना भी आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखन एक सृजनात्मक प्रक्रिया है; नियमित लेखन और पुनर्लेखन के अभ्यास से इसकी स्पष्टता तथा प्रभावशीलता बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'क्या', 'क्यों' और 'कैसे' के लिए अलग-अलग वाक्य रखें, ताकि प्रश्न का कोई पक्ष न छूटे।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

मुद्रित माध्यमों के संदर्भ में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य चार बातों का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में पाठक शब्दों और चित्रों से अर्थ ग्रहण करता है। वह अपनी सुविधा से सामग्री पढ़ सकता है और आवश्यक होने पर उसे दोबारा देख सकता है।
- मुद्रित लेखन में पाठक-वर्ग, व्याकरण और वर्तनी, अभिव्यक्ति की स्पष्टता तथा प्रकाशन की स्थान-सीमा का ध्यान रखना आवश्यक

है।

चरण 1: चार बिंदुओं की रूपरेखा बनाना प्रश्न चार बातों का उल्लेख चाहता है, इसलिए उत्तर को चार स्पष्ट बिंदुओं में व्यवस्थित करना चाहिए। पहला बिंदु लक्षित पाठक और भाषा के संबंध पर, दूसरा शुद्धता पर, तीसरा स्पष्ट एवं संक्षिप्त अभिव्यक्ति पर और चौथा सीमित स्थान में आवश्यक सामग्री देने पर केंद्रित होगा।

चरण 2: मुद्रित माध्यम की प्रकृति से संबंध जोड़ना समाचारपत्र या पत्रिका का पाठक अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार पढ़ता है। इसलिए लेखक को ऐसा शब्द-चयन करना चाहिए जिसे लक्षित पाठक समझ सके। लिखित सामग्री में उच्चारण, स्वर या हावभाव से अर्थ स्पष्ट करने का अवसर नहीं मिलता; अतः वाक्य स्वयं स्पष्ट होने चाहिए। प्रकाशन में जगह भी सीमित होती है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन में चार बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहली, पाठकों की आयु, शिक्षा और रुचि के अनुरूप परिचित शब्दों तथा सहज भाषा का प्रयोग हो। दूसरी, व्याकरण, वर्तनी और विरामचिह्न शुद्ध हों, क्योंकि त्रुटियाँ अर्थ बदल सकती हैं। तीसरी, वाक्य छोटे, स्पष्ट और सुसंगत हों; अनावश्यक विस्तार तथा दोहराव से बचें। चौथी, प्रकाशन की निर्धारित स्थान-सीमा का ध्यान रखकर आवश्यक सूचनाओं को उचित क्रम में प्रस्तुत करें, ताकि कम शब्दों में पूरी बात पाठक तक पहुँचे।

चरण 4: निष्कर्ष पाठक के अनुकूल भाषा, भाषिक शुद्धता, स्पष्ट-संक्षिप्त अभिव्यक्ति और स्थान-सीमा के अनुरूप प्रस्तुति मुद्रित लेखन की प्रमुख सावधानियाँ हैं।

त्वरित सुझाव: चार बातें पूछे जाने पर प्रत्येक बिंदु में एक अलग सावधानी लिखें; केवल 'सरल भाषा' को अलग-अलग शब्दों में न दोहराएँ।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और प्रिंट माध्यम में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम में समाचार और विचार मुद्रित शब्दों तथा चित्रों के रूप में प्रस्तुत होते हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ध्वनि, दृश्य और संचार तकनीक द्वारा सामग्री पहुँचाते हैं।

चरण 1: तुलना के आधार अंतर बताते समय प्रस्तुति, सूचना पहुँचने की गति, पाठक या दर्शक की सुविधा और आवश्यक साधनों को आधार बनाना चाहिए। रेडियो में ध्वनि तथा टेलीविजन में ध्वनि और दृश्य मिलते हैं; अखबार में लिखित सामग्री रहती है।

चरण 2: अंतर का प्रभाव समझिए मुद्रित समाचार में पाठक किसी अंश पर रुक सकता है, पिछली पंक्ति पर लौट सकता है और अपनी गति से पढ़ सकता है। प्रसारित समाचार में सूचना सुनने या देखने की गति प्रसारण तय करता है। रेडियो केवल श्रव्य होने से दृश्य नहीं दिखाता, जबकि टेलीविजन दृश्य भी दिखाता है। इसलिए सभी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों को केवल दृश्य माध्यम कहना गलत होगा। प्रिंट में प्रकाशन और वितरण में समय लगता है; प्रसारण से दूर बैठे लोग भी घटना की जानकारी तत्काल प्राप्त कर सकते हैं।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर प्रिंट माध्यम में समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ आते हैं; इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में रेडियो और टेलीविजन प्रमुख हैं। प्रिंट में सामग्री शब्दों तथा चित्रों में छपती है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ध्वनि और दृश्य से सूचना देते हैं। मुद्रित सामग्री पढ़ने के लिए साक्षरता आवश्यक है; रेडियो सुनने और टेलीविजन देखने के लिए यह अनिवार्य नहीं। प्रिंट को सुविधानुसार बार-बार पढ़कर सुरक्षित रखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम घटनाओं का तत्काल और सीधा प्रसारण कर सकते हैं तथा उनके उपयोग के लिए उपकरण और ऊर्जा चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों माध्यमों में प्रमुख अंतर प्रस्तुति, तात्कालिकता, साक्षरता की आवश्यकता और सामग्री को अपनी गति से ग्रहण करने की सुविधा का है।

त्वरित सुझाव: तुलना में एक ही आधार पर दोनों माध्यमों की विशेषता साथ लिखें; केवल उदाहरण गिनाने से उत्तर अधूरा रहेगा।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

उलटा पिरामिड शैली क्या है ? इसका प्रयोग कहाँ होता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में तथ्यों का क्रम उनके घटते महत्त्व के अनुसार होता है।
- समाचार के आरंभ में मुख्य सूचना, फिर उसका विस्तार और अंत में कम महत्त्वपूर्ण विवरण दिए जाते हैं।

चरण 1: शैली की रचना पहचानिए सामान्य कथा में परिणाम अंत में आ सकता है, पर समाचार में पाठक को पहले ही सबसे आवश्यक जानकारी मिलनी चाहिए। इसलिए भूमिका को लंबा करने के स्थान पर आरंभिक अनुच्छेद में समाचार का सार रखा जाता है।

चरण 2: क्रम और उपयोग का संबंध मुखड़े में सामान्यतः क्या, कौन, कहाँ और कब जैसे प्रमुख प्रश्नों की आवश्यक जानकारी आती है; कैसे और क्यों का विस्तार समाचार के अगले हिस्से में किया जा सकता है। सभी विवरण समान महत्त्व के नहीं होते। इसीलिए नीचे से संपादन करने पर समाचार का मूल आशय बचा रहता है। यह शैली व्यस्त पाठक को कम समय में उपयोगी सूचना देने में सहायक है। इसे केवल शीर्षक लिखने की विधि या घटनाओं को समय के क्रम में लिखने की शैली समझना उचित नहीं है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर उलटा पिरामिड समाचार लेखन की वह शैली है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले और शेष विवरण घटते महत्त्व के क्रम में दिए जाते हैं। आरंभिक अनुच्छेद, अर्थात् मुखड़े में समाचार की मुख्य सूचना रहती है। इसके बाद संबंधित तथ्यों, पृष्ठभूमि और अन्य विवरणों का विस्तार होता है। इसका प्रयोग मुख्यतः समाचार-पत्रों में समाचार लिखने तथा रेडियो और टेलीविजन के समाचारों में होता है। इससे पाठक को मुख्य बात तुरंत मिल जाती है और संपादक नीचे का कम आवश्यक अंश काटकर समाचार छोटा कर सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस शैली में महत्त्वपूर्ण से कम महत्त्वपूर्ण की ओर क्रम चलता है; इसका प्रमुख उपयोग समाचार लेखन में होता है।

त्वरित सुझाव: उलटे पिरामिड को याद रखने के लिए पहले मुख्य सूचना, फिर विस्तार और अंत में गौण विवरण का क्रम ध्यान में रखें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

तुलसी ने अपने पद 'धूत कहौ, अवधूत कहौ ...' में अपने स्वाभिमान को कैसे व्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली के इस पद में तुलसीदास सामाजिक निंदा और जातिगत संकीर्णता के प्रति निर्भयता व्यक्त करते हैं।
- राम के प्रति समर्पण उन्हें लोकनिंदा से ऊपर उठाकर आत्मसम्मान और स्वतंत्रता देता है।

चरण 1: पद के कथन का आशय धूत या अवधूत कहे जाने से तुलसी विचलित नहीं होते। वे स्पष्ट करते हैं कि किसी से वैवाहिक संबंध जोड़कर उसकी जाति बिगाड़ने का उनका कोई उद्देश्य नहीं। इस प्रकार वे जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर मिलने वाले तिरस्कार को अस्वीकार करते हैं। उनका कथन सामाजिक दबाव के सामने आत्मसम्मान बनाए रखने का प्रमाण है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर तुलसी कहते हैं कि लोग उन्हें धूर्त, अवधूत या किसी जाति का कहें, उन्हें परवाह नहीं। वे राम के सेवक हैं। माँगकर खाना और मस्जिद में सोना स्वीकार करके वे दिखाते हैं कि दूसरों की स्वीकृति पर उनका आत्मसम्मान निर्भर नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष लोकनिंदा की उपेक्षा, रामभक्ति और सादा स्वतंत्र जीवन तुलसी के स्वाभिमान को व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल निडरता न लिखें; लोकनिंदा की उपेक्षा को रामभक्ति और स्वतंत्र जीवन के प्रमाण से जोड़ें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कागज के पन्ने को खेत की तरह क्यों कहा है ? समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कागज के पन्ने की तुलना छोटे खेत से की गई है; दोनों अपने भीतर नई रचना के विकसित होने का आधार बनते हैं।
- खेत में बीज से अन्न उगता है और कागज पर भाव-विचार से शब्दों की फसल तैयार होती है।

चरण 1: रूपक का संबंध समझिए कवि खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना समझाते हैं। जैसे खेत बीज को अंकुरित होने का स्थान देता है, वैसे ही कागज का पन्ना मन में उठे भाव को शब्दों का रूप लेने का अवसर देता है। यहाँ खेत और पन्ने का संबंध उनके आकार के बजाय उनकी सृजनशील भूमिका से है। यह रूपक रचना की तैयारी, विकास और पाठक को मिलने वाले रस को एक संगठित प्रक्रिया के रूप में दिखाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कागज का पन्ना कवि का खेत है, क्योंकि उस पर भाव-विचार का बीज अंकुरित होकर शब्दों की फसल बनता है। कल्पना और संवेदना से विकसित यह काव्य-फसल पाठकों को आनंद देती है तथा बार-बार पढ़े जाने पर भी समाप्त नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने कागज को काव्य-सृजन का आधार मानकर खेत कहा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पन्ना–खेत, भाव–बीज और शब्द–फसल के संबंध जोड़िए।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'उषा' कविता में प्रकृति में होने वाला परिवर्तन मानवीय जीवन-चित्र बन कर किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह उषा के बदलते रंगों को परिचित घरेलू वस्तुओं से मूर्त करते हैं।
- राख से लीपा चौका, सिल और स्लेट जैसे बिंब प्रकृति को दैनिक मानवीय अनुभव से जोड़ते हैं।

चरण 1: बिंबों का आशय समझिए प्रातःकाल का आकाश एक ही रंग में स्थिर नहीं रहता। कवि उसके नीले, धूसर, लाल और उजले होते रूप को घर की रसोई तथा पढ़ाई से जुड़े परिचित दृश्यों में पहचानते हैं। इन उपमानों से दूर फैला आकाश भी पाठक के निकट का घरेलू जीवन-चित्र बन जाता है। सुबह की लालिमा और नमी के ये बिंब दृश्य को रंगमय बनाने के साथ रोजमर्रा की मानवीय गतिविधियों से भी जोड़ते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर उषाकालीन आकाश के बदलते रंग राख से लीपे गीले चौके, काली सिल पर लाल केसर और स्लेट पर लाल खड़िया जैसे घरेलू बिंबों में व्यक्त हुए हैं। इन परिचित मानवीय दृश्यों से प्रकृति का परिवर्तन सजीव, आत्मीय और सहज बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष घरेलू जीवन के बिंबों से उषा का प्राकृतिक परिवर्तन आत्मीय चित्र बनता है।

त्वरित सुझाव: केवल रंगों की सूची न दें; हर रंग को उससे जुड़े घरेलू बिंब से मिलाइए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'आत्मपरिचय' कविता में कवि को यह संसार अपूर्ण क्यों लगता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन का कवि-व्यक्तित्व प्रेम, संवेदना और अपने स्वतंत्र मनोजगत को महत्व देता है।
- सांसारिक उपलब्धियाँ और बाहरी ज्ञान प्रेम तथा सहृदयता का स्थान नहीं ले सकते।

चरण 1: कवि की जीवन-दृष्टि पहचानिए कवि संसार से जुड़ा है, किंतु अपने हृदय की स्वतंत्रता और प्रेममय अनुभव को छोड़ना नहीं चाहता। वह बाहरी उपलब्धियों को ही जीवन की संपूर्णता नहीं मानता। उसके लिए जीवन का मूल्य मनुष्यों के बीच भावपूर्ण संबंधों और प्रेम से तय होता है। इसलिए केवल सांसारिक सफलता का संसार उसके लिए पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: अपूर्णता का आधार स्पष्ट कीजिए कवि का कथन है कि जिन लोगों ने ज्ञान की खोज में जीवन बिताया, वे भी अज्ञानी रह गए। यह कथन पुस्तक-ज्ञान या उपलब्धि को अंतिम सत्य मानने की सीमा बताता है। प्रेम के अभाव में व्यक्ति जगत के अनेक तथ्य जानकर भी जीवन का मूल आनंद नहीं पा सकता। कवि की असंतुष्टि इसी संवेदनात्मक रिक्तता से जुड़ी है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि को संसार अपूर्ण लगता है, क्योंकि यहाँ प्रेम और आत्मीयता के स्थान पर बाहरी ज्ञान, स्वार्थ तथा सांसारिक उपलब्धियों को अधिक महत्व दिया जाता है। ज्ञान की खोज करने वाले भी जीवन के वास्तविक अर्थ से अनजान रह जाते हैं। कवि के लिए प्रेम जीवन की सार्थकता है; इसके बिना संसार की समृद्धि और उसका ज्ञान अधूरा है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रेम और आत्मीयता की कमी संसार को कवि की दृष्टि में अपूर्ण बनाती है।

त्वरित सुझाव: संसार की अपूर्णता को कवि की प्रेमप्रधान दृष्टि और ज्ञान की सीमा से समझाइए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कविता और फूलों के बीच की समानता और अंतर को 'कविता के बहाने' कविता के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण कविता की रचनात्मक संभावनाओं को प्रकृति के परिचित रूपों से आगे ले जाते हैं।
- फूल और कविता दोनों खिलते हैं, पर कविता का प्रभाव भौतिक सीमाओं से मुक्त होकर फैलता है।

चरण 1: समानता का आधार बताइए फूल का खिलना वातावरण को सुंदर और आकर्षक बनाता है। कविता का खिलना भी मन में आनंद, सौंदर्य और भावों का विस्तार करता है। इसीलिए कवि ने फूल के खिलने को कविता की अभिव्यक्ति का आरंभिक आधार बनाया है। दोनों की सार्थकता दूसरों को प्रसन्नता देने और संवेदना जगाने में भी दिखाई देती है। इस प्रकार कविता का सौंदर्य दीर्घजीवी है।

चरण 2: अंतर स्पष्ट कीजिए फूल की सुगंध और उसके जीवन की सीमा है। वह कुछ समय बाद मुरझा जाता है और एक निश्चित परिवेश तक प्रभाव डालता है। कविता के अर्थ और अनुभव अलग-अलग पाठकों तथा समयों तक पहुँचते हैं। उसका खिलना किसी एक स्थान, मौसम या निश्चित जीवनकाल में समाप्त नहीं होता; यही फूल से उसका महत्वपूर्ण अंतर है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूल और कविता दोनों खिलकर सौंदर्य, आनंद और ताजगी का अनुभव कराते हैं। फूल की सुगंध की तरह कविता की अनुभूति भी मन को प्रसन्न करती है। अंतर यह है कि फूल का जीवन और सुगंध सीमित हैं; वह मुरझा जाता है। कविता बिना मुरझाए समय और स्थान की सीमाएँ पार करके अनेक पाठकों के मन में खिलती रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदर्य और आनंद दोनों में समान हैं; कविता का प्रभाव फूल की सीमाओं से आगे जाता है।

त्वरित सुझाव: समानता में खिलना और आनंद, अंतर में मुरझाना तथा समय-स्थान की सीमा लिखिए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कृषक अधीर होकर बादल को क्यों बुलाता है ? 'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल जीवनदायी वर्षा और सामाजिक परिवर्तन की आशा का प्रतीक है।
- शोषित कृषक की दुर्बलता के पीछे परिश्रम के बावजूद उसका जीवन-रस चूस लेने वाली व्यवस्था है।

चरण 1: कृषक की दशा समझिए कृषक की जीर्ण भुजाएँ और शीर्ण शरीर उसकी गरीबी, श्रम तथा शोषण को सामने लाते हैं। अन्न उपजाने वाला किसान स्वयं सुख और पोषण से वंचित है। कविता में उसका सार चूस लिए जाने का संकेत बताता है कि उसकी विपन्नता केवल निजी कमजोरी का परिणाम नहीं, शोषण का परिणाम भी है। किसान की व्याकुलता उसके जीवन-संघर्ष और बदलाव की तीव्र आवश्यकता को प्रकट करती है।

चरण 2: बादल से आशा जोड़िए वर्षा खेतों में हरियाली और किसान के जीवन में आजीविका की संभावना लाती है। कविता में बादल विप्लव का वीर भी है; उसकी गर्जना जड़ शोषक व्यवस्था को चुनौती देने का भाव जगाती है। इसलिए कृषक की पुकार में पानी की आवश्यकता के साथ दुख, अन्याय और शोषण से मुक्ति की आकांक्षा सम्मिलित है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कृषक का शरीर शोषण और अभाव से दुर्बल हो गया है; उसकी भुजाएँ जीर्ण और देह शीर्ण हैं। उसका जीवन-रस चूस लिया गया है। वह बादल को अधीर होकर बुलाता है, क्योंकि वर्षा उसकी खेती को जीवन देगी। साथ ही, विप्लव के वीर बादल से उसे शोषक व्यवस्था के अंत और अपने जीवन में सुखद परिवर्तन की आशा है।

चरण 4: निष्कर्ष कृषक बादल में खेती के पुनर्जीवन और शोषण से मुक्ति की आशा देखता है।

त्वरित सुझाव: किसान की पुकार समझाते समय वर्षा की जरूरत के साथ बादल का क्रांतिकारी प्रतीकार्थ जोड़िए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ के कथन "मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है" — का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन की वक्ता लेखिका महादेवी वर्मा हैं; आशय उनके अपने नाम की अर्थगत गरिमा से है।
- महादेवी नाम का अर्थ महान देवी है। इस बड़े अर्थ को अपने लिए दुर्वह कहना विनम्र आत्मव्यंग्य है।

चरण 1: वक्ता और नाम का अर्थ यह कथन महादेवी वर्मा अपने नाम के संबंध में कहती हैं। महादेवी शब्द महान देवी का बोध कराता है और असाधारण महिमा तथा पूजनीयता का संकेत देता है। लेखिका अपने व्यक्तित्व को इस ऊँचे अर्थ का अधिकारी नहीं मानतीं। यहाँ नाम की विशालता का अर्थ नाम में अक्षरों की संख्या नहीं, उसमें निहित महानता है।

चरण 2: कथन के भाव को स्पष्ट करना दुर्वह का अर्थ ऐसा भार है जिसे सँभालना कठिन हो। अपने नाम की गरिमा को भारी बताकर लेखिका अपनी विनम्रता प्रकट करती हैं और स्वयं पर हल्का व्यंग्य भी करती हैं। यह न तो किसी शारीरिक बोझ की बात है और न भक्तिन का अपने नाम पर कथन। पाठ में भक्तिन के लछमिन नाम और उसकी निर्धनता का विरोध अलग प्रसंग है। उस तुलना के बीच लेखिका अपने नाम की बड़ी अर्थवत्ता की ओर भी संकेत करती हैं। दोनों स्त्रियों के नामों का प्रसंग जुड़ा होने पर भी प्रस्तुत वाक्य की वक्ता को पहचानना आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यह कथन महादेवी वर्मा ने अपने नाम के संबंध में कहा है। महादेवी का अर्थ महान देवी है, जिसमें अत्यधिक महिमा और पूजनीयता का भाव निहित है। लेखिका स्वयं को इतना महान नहीं मानतीं कि इस नाम की गरिमा का भार उठा सकें। इसलिए नाम की विशालता को दुर्वह बताना उनकी विनम्रता और अपने प्रति हल्के व्यंग्य का परिचायक है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखिका अपने महिमामय नाम के सामने स्वयं को साधारण मानती हैं; कथन में उनकी विनम्रता और आत्मव्यंग्य व्यक्त

हुआ है।

त्वरित सुझाव: सबसे पहले कथन की वक्ता महादेवी लिखिए; उसे भक्तिन के लछमिन नाम के विरोध से न मिलाइए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप नहीं मानने के पीछे डॉ. आंबेडकर के तर्क का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम का विभाजन कार्यों का बँटवारा है; जाति-प्रथा श्रमिकों को जन्म के आधार पर बाँटती है।
- स्वतंत्र पेशा-चयन और योग्यता के स्थान पर वंशानुगत ऊँच-नीच इसकी प्रमुख समस्या है।

चरण 1: मूल अंतर पहचानना डॉ. आंबेडकर श्रम-विभाजन को सभ्य समाज की आवश्यकता मानते हैं, लेकिन जाति-प्रथा को उसका समानार्थी नहीं मानते। इसमें केवल काम अलग नहीं होते; काम करने वाले मनुष्य भी स्थायी और ऊँच-नीच वाले वर्गों में बाँट दिए जाते हैं।

चरण 2: आशय का विस्तार सामान्य कार्य-विभाजन में व्यक्ति अपनी क्षमता विकसित करके दूसरा काम भी चुन सकता है। जातिगत व्यवस्था यह अवसर सीमित कर देती है और किसी काम को छोटा मानकर उससे जुड़े मनुष्य को भी हीन समझती है। समाज की जरूरत बदलने पर भी व्यक्ति अपना पैतृक व्यवसाय छोड़ने में बाधा अनुभव करता है। इसीलिए आंबेडकर का तर्क केवल आर्थिक दक्षता तक सीमित नहीं है; उसके केंद्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और गरिमा भी हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा केवल श्रम-विभाजन नहीं, श्रमिकों का विभाजन है। इसमें व्यवसाय जन्म से निर्धारित होता है, व्यक्ति की रुचि और योग्यता से नहीं। यह श्रमिकों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँटती है तथा पेशा बदलने की स्वतंत्रता रोकती है। इसलिए यह स्वाभाविक और उपयोगी कार्य-विभाजन के बजाय सामाजिक असमानता और आर्थिक जड़ता पैदा करती है।

चरण 4: निष्कर्ष जाति-प्रथा जन्माधारित, असमान और अनम्य श्रमिक-विभाजन है; इसलिए उसे सामान्य श्रम-विभाजन नहीं माना जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम और श्रमिक का अंतर तथा जन्म, ऊँच-नीच और पेशा-चयन तीनों अवश्य जोड़िए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी द्वारा कराये गये उन रीतिरिवाजों, अनुष्ठानों का उल्लेख कीजिए जिन्हें लेखक अंधविश्वास कहता था।
[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी की आस्था वर्षा से जुड़े लोकाचारों में प्रकट होती है।
- लेखक आर्यसमाजी विचारों के प्रभाव में इन अनुष्ठानों को तर्क की कसौटी पर परखता था।

चरण 1: प्रसंग को पहचानना लेखक के घर में जीजी पूजा-पाठ और परंपरागत विधियों में विश्वास रखती थीं। लेखक को उनके निर्देश पर इन कामों में भाग लेना पड़ता था। वर्षा के लिए घूमती इंदर सेना पर जल डालने के प्रसंग में लेखक की असहमति विशेष रूप से सामने आती है।

चरण 2: आशय का विस्तार दो दृष्टियों का अंतर समझना आवश्यक है। लेखक सोचता है कि अकाल में बचाकर रखने योग्य जल को सड़क पर बहाने से वर्षा कैसे हो सकती है। दूसरी ओर जीजी लोकविश्वास और दान की भावना से इस कर्म को देखती हैं। उत्तर में लेखक द्वारा अंधविश्वास माने गए कार्यों का उल्लेख करना है, इसलिए जीजी की मान्यता को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं

है। पाठ में अनुष्ठानों की कोई मनगढ़ंत सूची जोड़ना भी उचित नहीं होगा।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर जीजी लेखक से त्योहारों और पूजा-पाठ के अवसरों पर विविध रीति-रिवाज तथा अनुष्ठान करवाती थीं। लेखक आर्यसमाजी संस्कारों के कारण इन्हें अंधविश्वास मानता था। विशेष रूप से वर्षा के लिए निकली इंदर सेना के लड़कों पर पानी उँडेलना उसे निरर्थक लगता था। पानी की कमी में इस तरह पानी बहाने को वह व्यर्थ की बरबादी समझता था।

चरण 4: निष्कर्ष पूजा-पाठ के परंपरागत अनुष्ठान और वर्षा के लिए इंदर सेना पर जल डालना लेखक की दृष्टि में अंधविश्वास थे।

त्वरित सुझाव: इंदर सेना पर जल डालने का ठोस प्रसंग लिखिए; पाठ में न दिए गए अनुष्ठानों के नाम मत गढ़िए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'बाज़ार दर्शन' पाठ में बाज़ार को सार्थकता प्रदान करने का क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की उपयोगिता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में है।
- संयमित उपभोग से ग्राहक और विक्रेता के बीच उचित संबंध बनता है।

चरण 1: पाठ के विचार को समझना बाज़ार का आकर्षण अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने को प्रेरित कर सकता है। लेखक उस ग्राहक को महत्त्व देता है जो अपनी जरूरत पहचानता है। भगत जी अपनी आवश्यक वस्तुएँ लेकर लौटते हैं और बाज़ार की चकाचौंध में नहीं फँसते।

चरण 2: आशय का विस्तार यह सार्थकता अधिक से अधिक पैसा खर्च करने में नहीं है। जरूरत की स्पष्ट पहचान ग्राहक को संतोष देती है और वस्तुओं के विनिमय को मनुष्य के हित से जोड़ती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बाज़ार को सार्थकता देना अपनी वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार उपयोगी वस्तुएँ खरीदना है। भगत जी की तरह संयमी ग्राहक दिखावे और आकर्षण में नहीं बहता। ऐसा खरीददार बाज़ार को जरूरतों की पूर्ति का साधन बनाता है और अनावश्यक उपभोग से बचता है।

चरण 4: निष्कर्ष वास्तविक आवश्यकता के अनुसार विवेकपूर्ण खरीदारी ही बाज़ार को सार्थक बनाती है।

त्वरित सुझाव: अर्थ स्पष्ट करने के बाद भगत जी का उदाहरण दीजिए, केवल खरीदारी करना पर्याप्त उत्तर नहीं है।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
लुट्टन किसे अपना गुरु मानता था और क्यों ? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन के लिए ढोल की लय कुश्ती की व्यावहारिक शिक्षा का माध्यम थी।
- गुरु का महत्त्व मार्गदर्शन, साहस और संकट में सही प्रतिक्रिया सिखाने में है।

चरण 1: लुट्टन के अनुभव का आधार लुट्टन ने किसी परंपरागत गुरु से पहलवानी नहीं सीखी थी। कुश्ती लड़ते समय वह ढोल की बदलती ध्वनियों में लड़ने का संकेत सुनता था। चाँद सिंह के साथ मुकाबले में भी ढोल ने उसका हौसला बढ़ाया और उसे पलटकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

चरण 2: आशय का विस्तार यह संबंध औपचारिक शिष्य-दीक्षा का नहीं, अनुभव से मिले मार्गदर्शन का था। ढोल की आवाज सुनकर उसका आत्मविश्वास लौटता और हार मानने की जगह संघर्ष करने का बल मिलता था।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लुट्टन ढोल को अपना गुरु मानता था। उसने किसी गुरु से कुश्ती नहीं सीखी थी। ढोल की ताल उसे दाँव-पेंच का संकेत, उत्साह और साहस देती थी। चाँद सिंह से मुकाबले में इसी लय से प्रेरणा पाकर वह विजय प्राप्त कर सका।

चरण 4: निष्कर्ष ढोल की प्रेरक और मार्गदर्शक ताल के कारण लुट्टन उसे अपना गुरु मानता था।

त्वरित सुझाव: गुरु के रूप में ढोल लिखकर उसकी ताल से मिले साहस और कुश्ती के संकेत का कारण बताइए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'शिरीष के फूल' पाठ में शिरीष वृक्ष को उसकी किन विशेषताओं के कारण अवधूत कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत वह फक्कड़, अनासक्त साधक है जो सुख-दुख तथा बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव से मुक्त रहकर सहज जीवन जीता है।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खिलते रहने की क्षमता में ऐसी ही मस्ती और निर्लिप्तता देखी है।

चरण 1: अवधूत से तुलना का आधार समझना पाठ में शिरीष केवल एक सुंदर फूलों वाला पेड़ नहीं है। उसकी विशेषता यह है कि भीषण गर्मी और लू में भी वह कोमल फूलों से लदा रहता है। बाहर के ताप से विचलित हुए बिना खिलना उसकी आंतरिक जीवनी-शक्ति और सहज प्रसन्नता का परिचायक है। इसी कारण लेखक उसे साधारण परिस्थितियों से ऊपर उठे फक्कड़ साधु के समान देखते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर शिरीष भीषण गर्मी, लू और विपरीत परिस्थितियों में भी मस्त होकर खिलता रहता है। वह सुख-दुख से निर्लिप्त, अनासक्त और फक्कड़ है। बाहर के ताप से अप्रभावित रहकर जीवन की सरसता बनाए रखने के कारण लेखक ने उसे अवधूत कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की फक्कड़ मस्ती, अनासक्ति और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सरस बने रहने की क्षमता उसे अवधूत के समान बनाती है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ बताते हुए शिरीष की लू में भी खिलने की विशेषता से उसे जोड़ें; केवल फूलों की सुंदरता लिखना पर्याप्त नहीं है।